और योधा आइ यासों करहिंसंयुग आन ३६७ करहु जो संग्राम यासों होइअनरथ घोर । कहो अर्जुन अमितनाशोअशुभ तुम बरजोर ॥ सुरथकरिअब घोरअनरथ होइकिमि भगवान । सुनत अर्जुन वचनयाविधि कहोहरिसुखदान ३६८ सृष्टिदूसरिरचन के हित याहि रणमहँदेखि।पितामहउरहोतचिन्तासर्वकालविशेखि॥ सुरथके बलभूरि अर्जुन तोरहै बलथोर । कीजिये मतमोरअर्जुन सदा मानोमोर ३६९ वीरप्रद्युम्नादि यासों करहिं संगरजाइ । पातने इहि सव्यशाची लखि न परत उपाय॥कष्टते भो बभ्रुसुधन्वा पुण्य निज जब दीन्ह । पांप किंञ्चितं रहो तातन पुण्य पूरण चीन्ह ३७० पुण्य पूरण वासयातन कोउभय नहिंएहि । व्याघ्र तस्कर सर्प शिखिभय हो अघांग सुजेहि ॥ भाषि इमि प्रद्युम्नको लिय बोलि श्रीहरितत्र । सुरथसों रण कीजियो बहु बीरलै तुमअत्र ३७१ जातभे प्रद्युम्न आदिक कृष्णके सुनिबेन । पार्थरथ हरिहांकियो संग्राम सों गुण ऐन ॥ तीनि योजनहांकि कै रथ जातभे भगवान । सुरथ सों रणहोतभो इत लरतभे बलवान ३७२ पार्थ कृष्णन देखबोलत सुरथ भो तिहि काल । करिययुद्ध कि लखत नाहीं भ्रातृशत्रु कराल ॥ शिशुनसों किमियुद्ध कीजिय कृष्ण अर्जुन त्यागि । बालकन कहँ प्रेरिआगे आपुगे कहँभागि ३७३ करि निवारण इनहिं पीछे मारिहों द्वौवीर । अन्तरिच्छ पतालहू जहँ जाहिंगे रणधीर । इविधि मनहिं विचारिपूँछो सैनिकन नृपपुत्र । सैन्यमध्य नदेखिये गतकृष्ण पांडव कुत्र ३७४ सैनिका सुनि सुरथ वाणनि कहतभे इमिसोइ । वृथा जल्पत वीर क्योंतुम यथा कातरकोइ ॥ अग्रजेथित युद्धके हित करिय तिन संग्राम । लखहुगे हरि पार्थ पीछे शत्रु निज बलधाम ३७५ सुरथ परिवारितं सबनकरि महावीरन तत्र । हनत भो बहुअंग शायक कीन्ह व्याकुल पत्र ॥ कोउ निपतित वीर कोऊ मध्य खण्डित ताहँ । गदासों शिर भिन्नकाहू भयो हाहाजाहँ ३७६ तीनि योजन सैन्यमध्ये व्यूह शोभित जौन । ताहि मारि

विदारि श्रीहरि पाहँ कीन्हो गौन ॥ देखिपारथ कृष्णहूपर कीन्ह
शरझरि ह्वाल। तिष्ठतिष्ठ सुसमरमध्ये पार्थकह तिहिकाल ३७७
भाषि सहसन बाण छांड़े सूतहय दुखदीन। काटियोधनु सगुण
सध्वज रथहि तिलसम कीन ॥ मारिहय शतबाण मारे सुरथके
तनतत्र। सुरथहू अनगणित शायक हनो अर्जुनयत्र ३७८
अस्त्रशस्त्र प्रहार नाना कीन्ह दोऊवीर। तबहिं श्रीहरि कहो पा
रथ पाहँ हेरणधीर ॥ पश्य धीरज वीरको किमिकरतहै रणएह।
भ्रातृजन्य वियोग तवदल वधिहिगत सन्देह ३७९ याहितजि
हम इतहिआये तजो नाहींतोन। हीनवीर्यन होत याको बाण
छायेभौन ॥ कृष्णके येवैन सुनिकै कहो क्रोधितपार्थ। मारिहौं
तव अग्र याकहँ कहत नाथयथार्थ ३८० नहिंअसाध्य लखात
किञ्चित आपुके परसाद। गाढ़ जहँजहँ परो मोकहँ रक्षध्वज
उरगाद ॥ मारियो शतबाण यहकहि सुरथके तनहाल। सुरथ
को रथजातभो नभ मध्य ताहीकाल ३८१ कृष्ण फाल्गुन
अंग मारे सुरथहू बहुबान। श्वेतवाहन सों, विहँसि पुनि इविधि
वचन बखान ॥ भेदिहौं तवयान. अर्जुन राखिये इहिकाल।
मारियो शर भाषि याविधि भ्रमतभो रथहाल ३८२ कृष्ण
अर्जुन रुद्र संयुत महारणके माहिं। उभयपाद दबाइयो हरि
रहत थिर रथनाहिं ॥ भिन्न कृष्णार्जुनभये द्वौगार्धपत्रन तत्र।
कृष्ण अर्जुन धमितकीन्हो कम्बु निज निजयत्र ३८३ कहत
श्रीहरि भये याविधि वचन पारथपाहिं। धरत हमकरि जोरपै
रथ रहतहै थिरनाहिं ॥ विरथ सुरथहि करि यथारथ सुनत श्री
हरि बानि। सहयसध्वज सूत सहरथ भंजियो धनुतानि ३८४
विरथ सुरथहि कीन्ह पारथ पवनसुत तेहिकाल। प्रार्थरथ लां-
गूल निजसों कीन्ह वेष्टितहाल। बद्धकीन्हो भूमिमें धर कृष्ण
नाहिं चचाल ॥ सुरथ याविधि देखिकै कह सुनिय कृष्ण कृ-
पाल ३८५ नद्ध यह तव भारसों अब करिय रक्षाअत्र। ली-
न्ह धाइ उठाइ स्यन्दन वचन कह इमितत्र ॥ कहां डारिय पार्थ

स्यन्दभाषियेमोपाहँ। सागरे वा मेरुगिरि वापुरीकरिवरमाहँ३८६
मारियोशरपांच पारथ भयोमुर्छित सोइ । मुक्तस्यन्दन भयोकर
सोंजागिरथचढ़जोइ ॥ करन लागे युद्धदोऊ अस्त्र शस्त्रन तत्र ।
अर्द्ध विधुनाराचह्न तजवत्सदंतहुयत्र ३८७ बाराह कर्ण चुरप्र
अरु शिलीमुख नालीक। अस्त्रकंटक आस्यआदिक भये तजत
अलीक ॥ करहु अर्जुन कछु प्रतिज्ञा सुरथ कह इमिबैन। होत
अनृत न तत्र प्रतिज्ञा सुनो हम गुणऐन ३८८ कहोअर्जुन तुम-
हिं मारहुँ जनकके तवअग्र। कछु प्रतिज्ञातुमहुँ भाषिय अत्रवीर
समग्र ॥ डारिहौं भूमाहिं रथसों कहो नृपसुत तत्र। नाशहोवै
पुण्यमेरीकरौं जो नहिंअत्र ३८९ दो०। तिहि अवसर पारथ
सुरथ छांड़े कोटिन बान। अष्टोत्तरशत सुरथके रथकिय पार्थ
मसान३९०दलअपार मारत-भये क्रोधं सुरथ लखिकीन्ह। अर्द्ध
चन्द्र तजिंपंच धनु शायक बेधन लीन्हि ३९१ पुनि अर्जुन धनु
सगुणकरि भूपंगज रथ हीन। करिभुज दक्षिण अर्द्धविधु मारि
डारि महिदीन ३९२ अलंकार मण्डित भुजा गिरो लखत भेपा
र्थ। सुरथ बामकर लैगदा धावत भयो यथार्थ ३९३ पारथके अ-
श्वन हयो बहुरिजनार्द्दन अंग। एक सहस गजमारियो अयुत
अश्व रणरंग ३९४ द्व सहस्र रथभंजियो धावत इतउत सोइ।
तिष्ठमान हरिपार्थ हो बलीअपर नृपजोइ ३९५ याविधि कहिमा
रत भयो पैदल अयुत प्रमान। तब अर्जुन कर काटियो सहित
गदातजिबान ३९६ दोऊ कर बर्जित सुरथ कहोपार्थ सों बैन।
आपनिरच्छा करिय हरि राखिय रथ बुधिऐन ३९७ अर्जुन ऊपर
धाइयो महाबीर बलवान। चारिबाण फाल्गुन तजे ताकोआवत
जान३९८एकहिये भेदनकियो काटे पदद्वैतीर। शीश सकुण्डल
काटियो एकबाण रणवीर ३९९ धाव कबंधा गंड सो सेनादली
अपार। मुर्छित अर्जुन होतभे शिर उड़िलगो लिलार ४००
गिरोशीश सो भूमिमें बहुरि कृष्णपदजाइ। कृष्णशीश वह
करलियो बोलतभे सुखपाइ ४०१ देखिय अर्जुन सुरथयह

तथ्यवादि वर बीर। निजप्रणको राखतभयो सत्य ममांतिक धीर ४०२ त्वत्प्रसाद सों मारियो कह अर्जुनमें जाहि। ताहिदे-हुममहस्त में करहुँ बंदनायाहि ४०३ ताहिहस्त लै पार्थनिज कीन्हवन्दना अत्र। सुमिरत भे हरिगरुड़कहँ तेआवतभे तत्र ४०४ कहोकृष्ण यह सुरथ शिर तुमलैजाहुप्रयाग। बारि त्रिवेणीके विषे कहीगरुड़ यहबाग ४०५ माधव अत्र बिराज प्रभु गंगाजल नरयस्य। जबलगि तिष्ठतिअस्थि हैं स्वर्गभोग तब तस्य ४०६ तब आनन शुभतेज गत सुरथ केर भगवान। तद्य पिलैजैहौं अवशि आज्ञा मानि निदान ४०७ पावनहोइ प्रयाग मम श्रीहरि कहो बखानि। डारियलै शिर रवयह ममकोशेसुख गानि ४०८ बैनतेयलै सुरथशिर जबलगि गगन उड़ान। वृषा रूढ़ हरलखत भे गिरिजा सहसुखदान ४०९ आयसु भृंगी को दियो लाइयशीश विशाल। गरुड़काह लैजात हैं कहो उमा तिहिकाल ४१० सुरथहिमारो पार्थरण पुरायशीश शुभगात। कृष्णाज्ञाको पाइकै लिये प्रयागहि जात ४११ पठयो मैं भृंगीगणहि शीशलाइये हाल। मुराडमालमें लाइहौं कुराडल ज्वलित बिशाल ४१२ जेधर्मिष्ठ वदान्य हैं अरु कृतज्ञ रणशूर। जितका मनके करतहम शिरसों मराडन पूर ४१३ भृंगीधाये बेग सों गये गरुड़ के पास। मत्करदीजिय शीशयह योंविधि बचनप्रकाश ४१४ बलसों लेहौं छीनि नहु जानत बल न हमार। मुंच मुंच नहिं सर्पहम जोभय करहिंतुभार ४१५ गरुड़ उड़ायो पच्छ सों भृंगी गणको तत्र। तीरथ राजहि जातभे भृंगीके शिवयत्र ४१६ पच्छवात अतिघोर सों शुष्कपर्णवत देखि। भृंगी सों बोलत भई गिरिजा विहँसि बिशेखि ४१७ जानत नाहिं हरिवाह नहिं खगराजहि बलपूर। पच्छबात तुम जासुलहिं आये हरढिग दूर ४१८ सूखे तन बल हीनको पठयो शंकर तत्र। बीर पन्नगाशन गरुड़ हरिवाहन हैं यत्र ४१९ वृद्धवृषभ अतिजासुहै प्रिया नदी गजचर्म। वस्त्रशस्त्र खट्वाङ्ग है सुनि शिव बचसह

नर्म ४२० जाहुवृषभ लैआवहू बैनतेयसों शीश। जानहिं गिरि
जा दूतबल चले नन्दिकरि रीश ४२१ वृषनासा की बातसों
गरुड़ उड़ाने हाल । भ्रमत भये सबधरणि में गहिन सके तिहि
काल ४२२ बन सरिता गिरि सागरन सत्यलोक कैलास। बैकु-
ण्ठहुतजि दैव बश गेप्रयाग सुखत्रास ४२३ तीरथ में डारत भये
जल में डारत देखि। नन्दी लीन्हो धाइशिर हरकर दियो वि-
शेखि ४२४ मुण्डमाल के मध्य में लीन्हो शंभु लगाइ । गरुड़
जाइ हरिसों कहो शंभुचरित सुखदाइ ४२५ याविधि बर्णनकीन्ह
में सुरथ सुधन्वा गाथ। जियालाल सुख दायिनी दायक पदरघु
नाथ ४२६चौ०। नृप हरिदास भक्त हरिभारी । धर्मशास्त्रकीआ
ज्ञाधारी॥ पाटननगरबासइनकेरा। राजपूतहरिभक्तघनेरा ४२७
नृप दधीचिसम दानिनमाहीं । वचनपालबलि सदृशसदाहीं॥
भक्तिम जिमि प्रह्लादउदारा । नृप जगदेव सरिस रिझवारा
४२८ नृप जगदेव कथा अवगाई । याहीमें वरणौं सुखदाई॥
शूरवीर अरु न्याय प्रवीना। अरु रिझवार निष्ठमें लीना ४२९
इमि रिझवार निष्ठमें लीना । इकदिन नटिनि तमाशाकीना॥
ताको रागनाच अवलोकी। अपरकला आदिकनबिलोकी ४३०
ह्वैप्रसन्न धनदेन विचारा। ताके गुणसम कछुन निहारा॥ पुनि
विचार भूपतिं मनमाहीं । आपन शीशदेउँ इहिकाहीं ४३१
यहसुनि नटिनि निवेदनकीन्हा। पायो शीश आपु जो दीन्हा॥
कारज आइपरैगो जबहीं । लैजैहौं राउर शिरतबहीं ४३२ जां-
चनहेतु सुनौ नरनाथा। दूजे अग्रउठन अबहाथा॥ दक्षिणहाथ
न नृपति उठावौं। केतौ अधिक द्रव्यधनपावौं ४३३ यहकहिकै
वह नटिनि सिधाई । द्वितिय नृपति घर पहुँचीजाई ॥ ताको
नृत्यभयो तेहिकाला। दैनलगे कछुरीझि नृपाला ४३४ बामहाथ
तब नटिनि पसारा। क्रोधित पूछतभये भुवारा॥ कारण कवन
बामकरताना । सुनि नटिनी इहिभांति बखाना ४३५ दक्षिण
हस्त सुनो नरदेवा। भेंटभयो राजा जगदेवा ॥ वासों अधिक

न दानीकोई। जासु अयतानौं करसोई ४३६ राजाकही देउँ दशगूना॥ वासों मोहिं गनत किमिऊना। यहिविधि बातचीत बहुभयऊ॥ राजा तबहिं प्रतिज्ञा कयऊ ४३७ दशगुण नृपप्रण नटिनि दृढ़ाई। चलि जगदेव निकटसो आई॥ तिनको शीश लियो हरषाई। लिये शीश राजापहँ आई ४३८ यह जगदेव दियो लखिलीजै। आपहु अब विचारयुत दीजै॥ राजा लज्जित ह्वै उठिगयऊ। नटिनि सौँह पुनि मुखनहिं कयऊ ४३९ घूमी नटिनि बहुरि तहँ आई। रुण्डमाहँदिय मुण्ड लगाई॥ सोई रागगान पुनि कीन्हा। जापर रीझि राउ शिरदीन्हा ४४० तुरतहि राउ जियत तबभयऊ। देशद्देशमहँ निजयश कयऊ॥ रिझवारता नृपतिसम नाहीं। कोऊ निपुणभयो जगमाहीं ४४१ दो०। अहै नृपति जगदेवकर औरौ एकप्रसंग। इक नृप्रतनुजा मोहिके व्याहचहत तिनसंग ४४२ चौ०। नेगी भेजि व्याह हित दीन्हा॥ राजा अंगीकारन कीन्हा। माता तासु बहानो करिकै॥ राजहि बोलिलियो मुदभरिकै ४४३ मंत्रिन द्वार नृपति समुझायो। राजाके मनमें नहिं आयो॥ प्रेमासक्तहोइ नृपकन्या। प्रेमदिखायो नृपहि अनन्या ४४४ दुखयुत विनय कीन बहुभेवा। अंगीकार न किय जगदेवा॥ नृपति कियो नहिं अंगीकारा। तब कन्याकिय दुष्टाचारा ४४५ नृपको मस्तक काटि मँगायो। देखनहित अति प्रेमबढ़ायो॥ ऐसीदशा नृपतिकीदेखी। हरिराखो प्रण तबहुँ विशेखी ४४६ जबहीं मुख दिशि कन्याआवै। तब मुखघूमि और दिशिजावै। याको तातपर्यहै सोई। तियसों विमुख इविधिते होई ४४७ निश्चयकरि इस्त्रिनको संगा। है मुमुक्षुको करतज्ञभंगा॥ भगवत्प्रापतको जु अनन्दा। ताहि नाशि बांधत निजफन्दा ४४८ याको अभिप्राय यहजानो। राजा हरिदासहु इमिमानो॥ भे रिझवार निष्ठ ऐसेही। मानो तोदरकुल रविदेही ४४९ कलियुगमाहँ धर्मधुरधारी। मालातिलक प्रीति अतिभारी॥ भक्तनमाहँ प्रीति

रहि जैसी। काहूसों निबहै नहिं तैसी ४५० कोऊ भेष भक्तको धारे। तुलसीमाला तिलक सँवारे ॥ कन्या सँग सोवत निशि देखा। तासों बोले वचन विशेखा ४५१ ऐसो कर्मकरत तुम जोई। यामें निन्दा भेषकि होई ॥ यहसुनि सो तहँ सों उठि भागो। भयो ज्ञान हरिपद अनुरागो ४५२ दो०। विषयबासना त्यागिकै कियेजाइ बनवास। तहां करत भगवत भजन त्यागिसकलविधि आस ४५३॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठांमध्येप्रथमधर्मनिष्ठायां सप्तभक्तकल्पना वर्णनभक्ताम्बुनिधौतृतीयस्तरंगः ३॥

दो०। सीतापति पदपद्मको करिकै अमित प्रणाम। निष्ठा दूसरि वर्णऊं धर्मप्रचारक नाम १ चौ०। धारोरामव्यासअवतारा। तिनहिं दण्डवतकरों अपारा ॥ जेजग उद्धारनहित लागी। ब्रह्मसूत्र वरणे सुखपागी २ वेदनकाह विशेष प्रकाशा। महभारथभाषो सहुलाश्रा ॥ अष्टादश पुराण पुनिगायो। पुनि अस्मृति बनाय सुखपायो ३ दो०। धर्मभागवत जौनहै तिहि प्रवृत्तिकीऔर। कुलिशरेख पदपद्मकी जो रेखन शिरमौर ४ चौ०। वृत्तासुर अघ महाविशाला। बधनहेत पविरेख कराला ॥ पाप पहाड़ ढहावनहारा। ताहि प्रणामकरौं बहुबारा ५ भगवद्भक्ति युक्त जेकर्मा। ताकहँ कहत भागवतधर्मा ॥ सुमिरण कीर्त्तन पूजनआदी। सेवभजन बन्दन इत्यादी ६ करै कोउ संदेहजुयामें। धर्मभागवत अरु निष्ठामें ॥ भेदकाह्र तांकोसो सुनिये। अभिप्राय कर्मनसों गुनिये ७ कर्महोइ चाहै निष्कामा। चाहै होवै कर्मसकामा ॥ जो निष्काम कर्मकरकोई। धर्मभागवत जानिय सोई ८ इहि जनु अगिले जन्महुकीन्हे। करि भगवत अर्पण जो दीन्हे ॥ भगवतभक्ति प्राप्त जोहोई। तेहि सम्बन्ध कर्मकर जोई ९ दो०। सावधानह्वै भक्तमन धर्म भागवतमाहिं। बहिरन्तर चितवृत्तिको प्रतिक्षण टारननाहिं १० चौ०। और कर्म

करनो नाकरनो। सो स्वाधीन भांति इहिबरनो॥ बहु आचार्यन को मतसोई। भक्तिप्राप्त कर्मनसों होई ११ जबलौं देहदशाको भूली। मग्नन होइ प्रेमरस फूली ॥ तबलौं सन्ध्याआदिक कर्मा। आवश्यक करिये सबधर्मा १२ धर्मभागवतमें चितजासू। है एकाग्र कर्म जो तासू ॥ सम्बन्धी हरिभक्ति सुजानो । उनको कर्म न जीमहँआनो १३ सो हरिभक्ति प्रचारकजोई। नौकासदृश जानिये सोई॥ आपहु पार भलीविधि जावें । औरनहूंको पारलगावें १४ तारणतरण चरणहै जोई । ऐसेही भक्तनहित सोई । यदपि भागवत धर्म सुदेशा ॥ भगवतवेद अजहिं उपदेशा १५ पाइप्रवृत्ति वेदअनुकूला। धर्म भागवत सुखको मूला ॥ ताहूपर विशेष दायाहित । धर्मप्रवृत्तिम कीन इविधिचित १६ ब्रह्महुब्रह्म प्रबन्धनराखा । कइकयुक्त परगटकरि भाखा ॥ ऋषीश्वरन भक्तनमुखतेरे । चरित रचावतभये घनेरे १७ दो० । सूत्रतंत्र अस्मृति सहित अरु वेदांतहुजानि । मीमांसा पातंजलिहु येषटशास्त्र बखानि १८ चौ० । बालमीकि रामायण भाखा। व्यास महाभारत रचिराखा ॥ बहुइंतिहास पुराण बनाये। तिहिमग चलत लोग सुखपाये १९ पुनि हरि लोगन मनगति जानी। काव्यकि पदपदार्थ महँमानी ॥ नाटक चम्पू काव्य रचायो। पुनि साहित्य शास्त्र प्रगटायो २० तिनसों शिक्षा कियो विशेखी। ताहुम भ्रमित भ्रमित मतिदेखी ॥ टीका करन प्रचार चलायो। ताहुम लोगन समुझिनपायो २१ अल्प बुद्धि नर कलियुग देखी । प्रगटे भगवत अंश विशेखी ॥ सूर दास अरु तुलसीदासा । अग्रदास नाभा सुखवासा २२ कृष्ण दास अरु नन्दहुदासा। जिनबहु भगवत चरित प्रकासा ॥ भाषाभगवत चरित बखाने । देखिभक्तजन भक्ति लुभाने २३ पुनि दूसर उपाय यहठयऊ। निजमुख धर्म न भाषत भयऊ॥ और सहसन गुरू बनाई। करीभागवत धर्म बड़ाई २४ नदजा अरु निज पार्षदजैसे। ब्रह्माशिव सनकादिक तैसे॥नारद शुकाचार्य

हू जानौ। गीष्पति व्यास वशिष्ठहु मानौ २५ पुनि कलिमें निज अंशनतेरे। धारण किये रूप बहुतेरे॥ रामानुज निम्बारक स्वामी। अपरमाधवाचारयनामी २६ भेवल्लभाचार्यसुखसारा। हित हरिबंशरूप पुनिधारा॥ विष्णु स्वामीहू पुनि भयऊ। रूप शंकराचारय लयऊ २७ जिनकी कृपा सुकोटिन जीवा। पापात्मा उद्धरे अतीवा॥ फिरितीसरि बिचार कियेऐसे। निज मन्दिर वा मूरति जैसे २८ भजन और तपवास स्थाना। जिमिवद्री आदिक बननाना॥ और,आपने धाम् सुहाये। जिमिमथुरा साकेतक हाये २९ और तीरथहुजानिय ऐसे। गंग। यमुनापुष्कर जैसे॥ जासुप्रभाव भक्ति परचारा। होतभयो भक्तन सुखसारा ३० धर्म भागवतकी दृढ़ताई। राखत्र भगवतको सुखदाई॥ जबजब आइ विघ्न कछु परई। तब अवतार जगत हरि धरई ३१ करि संहार विघ्नकर्त्तनको। थापत बहुरि सुनिज धर्मनको॥ गीता में हरि भाषो सोई। धर्महानि अर्जुन जब होई ३२ वृद्धिहोत अधरमकी जबहीं। मैं अवतार लेतहौं तबहीं॥ धर्म थापि दुष्टनें बधकरिकै। भक्त सहाय करौं मुद भरिकै ३३ तासों आवश्यक चित दीजै। धर्म प्रचार परिश्रम कीजै॥ यासौं हरिहि महा सुखहोती। धर्म प्रचारक भगवत जोती ३४ बिमुख जीव हरि सन्मुखलावै। दश सहस्र हयमख फलपावै॥ भगवत कथा कहै कहवावै। भजन कुटी हरिभौन बनावै ३५ धर्मशाल बाटिका तड़ागा। कूप पाठशाला हुबिभागा॥ पुनि ऐसे मन्दिर बनवावै। जासों भजनी जन सुखपावै ३६ भगवत चरितन काहैं बनावै। टीका पोथिन रचि सुखपावै॥ अधरम बर्जि सुधर्म लगावै। रहि इहिभांति जगत सुखपावै ३७ अवधपुरी आदिक अस्थाना। एकादशी आदि व्रत नाना॥ भगवत जन्म दिवस मुददाई। लोगनकरै प्रवृत्त सदाई ३८ येसब सामग्री सुखकारी। धर्म भागवत बर्द्धनहारी॥ जेकोऊ भगवतके दासा। लोगन उद्धारत सहुलासा ३९ अथवा परउपकारीजेऊ। जिनकी मनोवृत्ति इहिभेऊ॥ तिनकी को करिसकै

बड़ाई । वेहैंरूप कृतार्थ सदाई ४० प्रगट करन निजयश संसारा। धर्म भागवत करत प्रचारा ॥ तेऊ भगवतको अतिप्यारे । जिहि प्रभाव सहसन नरतारे ४१ धर्म भागवत जौन प्रचारा। आधिक्य ताक वार न पारा ॥ सो वर्णन अब सुखदघनेरी । कथा अनंता चारयकेरी ४२ लिखी प्रपन्नामृतमें जोई । सुमिरण भयो कहत अब सोई ॥ ठाकुर द्वार नगर मगबीचा । गड़हा एक भयो अति नीचा ४३ तबहिं अनंताचार्य विशेषी । मारग क्लिष्ट भयो सो देखी ॥ फावड़ाहुटोकरिकरधरिकै । गड़हा भरन लाग मुदभरिकै ४४ । छन्द बरवा । गर्भवती तिनकीतिय लीन्हो संग । ढोवनलागे मृतिका सहित उमंग ॥ प्रसवकाल ढिग आयो तातिय काहँ ।ढ़ोने को दुखभारी भो मन माहँ ४५ भगवत निजबपु कीन्हो तब पनिहार । तिनकी तियसों भाषो हरिसुखसार ॥ मैं ढोकरि टोवतहौं बदलेतेरि । तुम विश्रामकरौ अब थोरिदेरि ४६ कछुक देरमें लखो अनन्ताचार्य । तियबदले पनिहार करतहै कार्य ॥ सोंटालै कर धाये कहतू कौन । भयोह मारे भागम साक्षीजौन ४७ दोहा । जब समीप पहुंचे तबहिं इकभागने सिवाय । भगवतको आयोनहीं दोसर कछू उपाय ४८ चौपाई । मन्दिर भागि घुसे हरिजाई । गयेअनन्ताचार्य्यहु धाई ॥ देखोहरिको बपुक्षण तेही । मिट्टीमाहँ भरीसब देही ४९ यासों बूझिपरी यह हाला ।·दयाकरी तियपर गोपाला ॥ तबकर जोरि अनंताचारी । हर्षसहित अस्तुति अनुसारी ५० जयति जयति जै त्रिभुवन भूषण । जनउर मोह तिमिर हर पूषण ॥ जनसुखकार उधारनवारन । सुररक्षक नरभक्षक दारन ५१ जैजैजै दिनकर कुलकेतू । रक्षक धर्मनीति श्रुति सेतू ॥ विप्रधेनु सुर संतन पालक । काम क्रोध मद लोभहु शालक ५२ इहिविधि प्रेम मगन मनबानी ।'अस्तुति करत भये सुखदानी॥ बहुरि अनंताचारय बोले । सुन्दरमीठेबचन अमोले ५३ उचित बात यहभक्तन काहीं । करैं प्रवृत्त सुधर्म सदाहीं ॥ कौनौविधि

की विद्या जाने। ताही में हरिचरित बखानै ५४ बिन हरिचरित काव्य है कैसी। बस्त्रहीन सुन्दर तियजैसी॥ कौनो भाषामें नि-र्माणा। हरिगुण युत बुध करत प्रमाणा ५५ सोरठा। बीस भक्त. सुखधाम निष्ठा धर्म प्रचारके। बरणौं तिनके नाम सुखदायक जिनके चरित ५६ चौपाई। तिनमें प्रथम द्रुहिणकी गाथा। बरणौं नाइ रामपद माथा॥ सुर ज्येष्ठ सब जगके ताता। भक्तन मांझ श्रेष्ठ विख्याता ५७ धर्मप्रचारक निष्ठा माहीं। जिन स-मान दोसर जग नाहीं॥ भगवतकी बिभूतिहैं सोई। नाभि कमलसे जन्मे जोई ५८ निज अरु जग उतपतिको ज्ञाना। तप पश्चात भयो सुखदाना॥ पुनिपाई सामर्थ्य अपारा। भगवत धर्म जगत विस्तारा ५९ अबतक ब्रह्माको उपदेशा। चलोजात जगमाहँ सुदेशा॥ नारद सनकादिक ऋषिनाना। तिन कहँबहु उपदेशत ज्ञाना ६० जिन करि कर्म ब्रह्मपुरपावा। तिनहिं देत उपदेश सुहावा॥ तासों मुक्ति होत सुखदानी। इहिबिधिकहत पुराण बखानी ६१ बाधा होत धर्ममें जबहीं। भक्तन सुरन होत दुख तबहीं॥ तब परमेष्ठी रचत उपाई। हरिअवतार हेतु सुखपाई ६२ अधरम टारि धर्म हरिधारत। दुष्टन बधकरि संत उबारत॥ इहिबिधि कथा आतमभूकेरी। कही पुराणन मांझ घनेरी ६३ दोहा। कही पुराणनके बिषे धाताकी बहुगाथ। ताते मैं संक्षेप कहि नाइ रामपद माथ ६४ चौपाई। अब सीतापति पद उरधरि कै। शिवकी कथा कहौं मुद भरिकै॥ भक्तराज पदवी जिन केरी। धर्मप्रचारक बुद्धि घनेरी ६५ ह्वैआचार्य्य आपु जगमा-हीं। उपदेशत बहु जनन सदाहीं॥ संप्रदाय विष्णुस्वामी के। हैं आचारय शिवजी नीके ६६ भयसेबड़े चाढ़त जबहीं। प्रगटे स्मार्त्त संप्रदा तबहीं॥ रूप शंकराचार्य्यक धारा। किय प्रवृत्त मत स्मार्त्त उदारा ६७ प्रगटो विष सागरु महँ जबहीं। लागे ज रन देवता तबहीं॥ लखि शंकर उरदया बढ़ाई। बिरसन पान कियो हरषाई ६८ रामहिबिन घूमत भ्रमपाई। लेन परीक्षा सती

सिधाई ॥ रूप जानकीको तहँ कीन्हा। तिहिकारण शंकर तजि दीन्हा ६९ सती देह तजिहिम गृहजाई। जन्मी पारवती तनु पाई ॥ तहँ, बहुभांति तपहि मनु दीन्हा। अंगीकार शम्भु तब कीन्हा ७० ऐसे शम्भु महा सुखधामा। रसिक भक्त नृपदाहन कामा ॥ इकदिन शिव गिरिजासन बोले। मृदुल मनोहर वचन अमोले ७१ एकबार सुख रामजु गावै। सहस नाम कर सो फल पावै ॥ पारवती करि दृढ़ विश्वासा। कहि प्रभुनाम गईं शिव पासा ७२ तब शिव मन प्रसन्न अति भयऊ। गिरिजहि वाम अंग धरिलियऊ ॥ एकसमय सनकादिक आई। दियप्रसाद भगवत करलाई ७३ आनँदसों तब सुधि बिसरायो। गिरिजहि भूलि आपु सबुखायो ॥ नगजा शापदियो शिवकाहीं। नहिंबिचार कीन्हो मनमांहीं ७४ जो निर्माल्य आजुते खैहै। सोतजिकाय नरक को जैहै ॥ गिरिजाशाप दियोहै जबते। शिव निर्माल्य त्याज्य है तबते ७५ एकसमय शिवगिरिजा संगा। चलेजात मग सहित उमंगा ॥ द्वै अस्थान ऊजेर देखी। कीन्हो शिव दण्डवत विशेषी ७६ पारवती पूँछासुख पाई। किहिदण्डवत कियो सुरसाईं ॥ तब शिव शंकर आनंद धारी। गिरिजा सोंइमिगिरा उचारी ७७ बर्ष सहस्र बीति कै गयऊ। भगवद्भक्त इहां इकभयऊ ॥ पुनिदूजे अस्थान प्रभावा। गिरिजहि शंकर भाषिसुनावा ७८ वर्षसहस्र बीति जबजैहै। भगवद्भक्त एक इतह्वै है ॥ तासों येखेरे सुखदाई। पूजन करिबे योग सदाई ७९ ऐसे शिवकेचरित अपारा। बेद पुराण सुयश बिस्तारा ॥ बालरूप सियपतिकर ध्यावत। नित्यनवीन प्रेमप्रगटावत ८० दो० ।इहिविधिबरणी शंभुकी कथामहा सुखदाइ। घटज कथा अब बरणऊं रामचरण शिरनाइ ८१ चौ० । येअगस्त्य ऋषिपरम सुजाना। रामोपासक गतमद माना ॥ बहुबिद्यन आचारय सोई। कहो अगस्त्य संहिता जोई ८२ घटसे जन्मभयो है जासों। कुंभजनाम कहायो तासों ॥ धरिगंडूष

माहिं सब सागर। पान कियो कुंभज मति आगर ८३ दानव देव बोझसे हीची। राज राज दिगभूमैं नीची॥ लही याम्य दिग्भूमि उचाई। तबहिं अगस्त्य रहेतहँ जाई ८४ तब उनके प्रभाव को पाई। उत्तर ऊंची याम्यनिचाई॥ पुनिजिन के प्रभाव को पाई। बिन्ध्याचल नहिं उठत कदाई ८५ मैत्रा वरुण मांगि यह लीन्हा। आपु गमनं दच्छिण दिशि कीन्हा॥ जबलगि हम आवैं नहिं भाई। तब लगिपड़े रहौ इहिठाई ८६ तासों घटजन उत्तर जाहीं। पड़ारहत बिन्ध्याचल ताहीं॥ कुंभजकी इमिकथा सुहाई। मैंबरणी संक्षेपहिगाई ८७ सोरठा। रामचरण उरआनि रघुबर दरशन चरणभजि। बरणौं सुखद बखानि स्वामी रामानुज कथा ८८ चौ०। जिमि भगवत जग के उद्धारा। हेतुलिये चौबिस अवतारा॥ तिमिकलिकाल चारिबपु धरिकै। धर्मप्रकाशकियो सुद भरिकै ८९। छन्द बरवा। चारिसंप्रदाथापी अति सुख पाइ। प्रथमहि सनकादिक की आँनँददाइ॥ निम्बारक स्वामी आचारय तासु। दोसरि श्री रामानुज स्वामी जासु ९० तृतियसंप्रदा शिवकी आनँद दानि। तिहिआचारय बिष्णुस्वामी जानि॥ ब्रह्मसंप्रदा चौथी सौधकं कार्य्य। तासु माधवाचार यहैं आचार्य ९१ भक्तिरूप भुहुमी के धारण हेत। संप्रदायदिग्गज सम बीर्यनिकेत॥ श्रीयसंप्रदा चारौं मेंहैं जौन। आचारय रामानुज स्वामी तौन ९२ निज प्रभावं को गहिकै पतित अनेक। संसारार्णव तरिगे धारि बिवेकं॥ तरत जातहैं आजहुं भक्तिहि धारि। भक्तिप्रताप कि महिमा जिनकी भारि ९३ दो०। रबिकर सम प्रगटित जगत उद्भव मरणप्रबंध। ग्रंथ प्रपन्नामृतबिषे बरणीं युत सम्बन्ध ९४ परम्परा प्रारंभ से रामानुजपर्यन्त। लिखी प्रपन्नामृत बिषे कथासुखद अत्यन्त ९५ दो०। हरिभक्तन पदकंमल भजि नाइरामपद माथ। स्वामी रामानन्द की बरणौं उत्तम गाथ ९६ चौ०। रामानन्द स्वामि सुखदायक। भगवद्भक्त सिद्ध सबलायक॥ आचारय हरिभक्ति प्रचारक। मुद

धारक अघश्रोघ विदारक ९७ जग समुद्र तारणके हेतू । निज संप्रदा बांध दृढ़सेतू ॥ जिनकीकृपा प्रभावहि लहिकै बहुजनभे प वित्रमुद गहिकै ९८ जैसे भये अनंतानंदा । सुरेश्वरानंदहु सुखकन्दा ॥ सुखानन्दपीपा रैदासा । भावानन्द सेन सुखरासा ९९ धनाजाटहू अपर कबीरा । तरे कृपा जिन जगत गंभीरा ॥ येस्वामी दक्षिण दिशिमाहीं । चेला भे संन्यासी पाहीं १०० करि करि विविध भांति सों साधन । करत रहे भगवत आरा धन ॥ एक दिवस फूलन के हेता । फुलवारीगे बुद्धि निकेता १०१ तहँ राघवानन्दजी स्वामी । रामानुज संप्रदाम नामी ॥ तिनके दरश तहां तिनपाये । तब राघवानन्द समुझाये १०२ है वृत्तांत तुमहिं कछुज्ञाता । आयुर्बल तव शेष न ताता ॥ अंत समय अपनो लखिलीजें । तासों भगवत शरण गहीजे १०३ रामानँद सुनि अचरज पाये । चलिसंन्यासी गुरुढिग आये ॥ आइ सकल वृत्तांत बखाना । तबतिनहूं देखो धरि ध्याना १०४ जानत भये मृत्यु सतिभाऊ । परकछु नहिं करिसके उपाऊ ॥ दोनों जने चले तहँ तेरे । गये राघवानँदके नेरे १०५ कृपारा-घवानँदअति कीन्हा । तिनहिं मंत्र उपदेशहि दीन्हा ॥ पुनि रामानँद प्राणसुहायो । दशम द्वार ब्रह्माण्ड पठायो १०६ टरी मृत्युको अवसर जबहीं । किय चैतन्य जियाइक तबहीं ॥ चिरंजीवि कहि आशिष दीन्हा । रामानँद सेवा बहुकीन्हा १०७ बहुत काल गुरु सेवाकरिकै । तीर्थाऽटनहि चले मुद भरिकै ॥ तीर्थ करत बद्रविन आये । बाराणसी माहँ पुनि छाये १०८ पंच सुरसरी घाट सुहायो । तहां बासकहि आनँद पायो ॥ तहां पादुका अजहुं बिराजत । दर्शन करत अखिल अघ भाजत १०९ गये बहुरि गुरु सेवामाहीं । आचारिन पूछो तिन पाहीं ॥ क्रिया और आचार घनेरा । तिनमें भेद परो तिन हेरा ११० अपने से न्यारे तिन कीन्हा । तब राघवा नन्द कहि दीन्हा ॥ तुम अपना पथ अलग चलाओ । राम

भक्ति जगमहँ प्रगटाओ १११ रामानन्द सुनत सुख पायो। रा-
मावत संप्रदा चलायो॥ रामानन्दीहू तिहि भाषत। सीताराम
ध्यान उररास्वत ११२ दो०। आचारिनकी रीतिपर नहिं यामें
आचार। कीन शास्त्र सिद्धांत सो यह मनमें निरधार ११३ चौ
पाई। जो भगवत शरणागत भयऊ। तासुबरण बन्धन छुटि
गयऊ॥ अच्युत गोत्रटेक सो धरई। भोजन एकपंक्ति सबकरई
११४ सोयह सकल शास्त्रअनुसारा। पञ्चरात्र नारदहुपुकारा॥
कीजिमि आश्रमचारि बखाने। तिमि हरिभक्ति आश्रमहुजाने
११५ सबहरिभक्त बरणहैंएका। कहतभागवत तासुविवेका॥
सावधानद्विजकर्म नहोई। परहरिभक्त होइनहिंसोई ११६ नीच
बरणहरि भक्तिहिधारै। ताहिश्रेष्ठ सदग्रन्थपुकारै॥ ताकी अहै
एकपरमाना। हैप्रसिद्ध सोकरतबखाना ११७ जबकतुनृपति युधि
ष्ठिरकीन्हो। सुरमुनि विप्र पूजिमुदलीन्हो॥ पुनिहरिसों बोले
सुखपाई। पूरणयज्ञ भईकीनाई ११८ तब श्रीहरि नृपमाणिसों
बोले। सुन्दरवचन मनोहरखोले॥ इहिथल एकशंख धरवाइय।
तासोंइहिबिधि वचनसुनाइय ११९ पूरणयज्ञ भयो जोमोरा। तौ
तुमकम्बु करौ धुनिघोरा॥ यहसुनिनृपदर तुरितधरायो। तासों
सोई वचन सुनायो १२० सुनत शंखबोलो नहिं लेशा। तब
राजा मनभयो अँदेशा॥ करिप्रणाम तबकह नृपधीरा। यहकस
चरितभयो यदुवीरा १२१ पूजे सुरमुनि विप्रबुलाई। कस न पूर्ण
क्रतुभई गुसाईं॥ तब श्रीहरिकह सुनहु नरेशा। आये द्विज
मुनि ऋभवसुरेशा १२२ परमभक्त बाल्मीकि सुजाना। ताको
नृपति बोलि नहिं आना॥ ममहितदेत भक्त तनमनधन। तिन
समता न पाव सुरमुनिगन १२३ ताको नृपमणि तुरित बुला
इय। पूजि यज्ञ पूरणफल पाइय॥ सुनत नृपति निजबन्धु
बुलाये। बालमीकिगृह तुरित पठाये १२४ तासु भुवन पहुंचेते
जाई। कहि न जाइ शोभा अधिकाई॥ सुन्दर भुवन अनूपम
सोहा। देखत सुरनर मुनिमनमोहा १२५ तुलसीवृन्द अनूपम

गजत । रामनाम अंकितगृह छाजत ॥ भुवनमध्य इकभुवन विराजत । उपमा तासुदेत कविलाजत १२६ दो० । श्यामपीत उज्ज्वल हरित लोहित धूमप्रकाश । चित्रितसो मानहुं तहांकीन नवग्रहवास १२७ चौ० । तहँ हरि चित्रशाल बहुराजत। लखि प्रकाश रविशशि करलाजत ॥ तेहि मन्दिर सियराम विराजे । कोटिन माररूप लखिलाजे १२८ बालमीकि तहँई सुख छावत । करिपूजासो चमर डुलावत ॥ तुलसीमाल गलेबिच धारी । तिलक ललाट महाछबिभारी १२९ पाटम्बर कटि देश सुहायो । रामनाम रसना रटलायो ॥ यहिविधि भक्ति स्वपच की देखी । नृपति बन्धु सुखलहे विशेषी १३० जाइ सामुहे विनयसुनाये । तुमहिं लेनहित नृपति पठाये ॥ सुनि इमि बालमीकितबबोले । सुन्दर वचनमनोहरखोले १३१ मैं जगसब्रजातिन मेंनीचा । किहि विधि चलौं मुनिन के बीचा ॥ तब तिन तासु बिनयबहु करिकै । लैआयेनृपढिग मुदभरिकै १३२ कृष्णायसु लहि तबनृपराई । धोयेचरण स्वपचकेजाई ॥ गहिकरताहि पीठ बैठारा। भोजनअग्रधरे पुटथारा १३३ ब्यंजनछरसनामकोजाना॥ सबमिलाइएकै सो खाना । मनमें द्रुपदसुता अनखानी ॥ यह कसब्यंजन भेदनजानी १३४ स्वपचग्रासजबमुखमें डारा । अल्प शब्द सों शंखपुकारा॥ देखिकहोइमि नृपकुलराई । यहकस चरित भयोयदुराई १३५ ह्वैस्वशब्ददर बोलतभयऊ। सुनिहरिद्रुपदिहि पूंछनलयऊ ॥ तुमानिजमनमें कीहविचारा। जासोंकम्बुन शब्द उचारा॥ १३६ सुनतग्लानि द्रौपदिमनैआई । तबदरकीन्हों शब्द महाई ॥ स्वपचजेइँकरि अचमनलीन्हा। तबताम्बूलनृपति मणि दीन्हा १३७ करिसनमान बिदानृपकयऊ । पूरणयज्ञजानि मुद भयऊ ॥ इमिहरिभक्तहिदीनबड़ाई। बिप्रदेवमुनि माननवाइ१३८ भक्तिवंतनीचहु हरिपावै। भक्तिहीनकुल उचनभावै ॥ समदमनियम ज्ञानविज्ञाना । जपतपव्रत सुकर्ममहाना १३९ भक्तिसमान हरिहि प्रियनाहीं ॥ वरणोवेद पुराणनमाहीं । रामानँदसोंमग प्र

गटायो ॥ चलतदुःखतजि सुखसरसायो १४० गंगासागरसंग-
मजहँवां। कपिलस्थानगुप्त भो तहँवां॥ रामानन्दजाइ मुदभीने।
सोईथल प्रकटित पुनिकीन्हे १४१ सिद्धनमाहँ कपिल अव-
तारा। लै श्रीहरि संन्यास प्रचारा॥ होत समाज जासु थल
भारी। कहौं नौमि कछु मति अनुसारी १४२ छंद रामगीतिका॥
बन्दिये पद कपिलमुनि के वत्समोद बढ़ाइ। जासु उ-
त्पल चरणरजसों हृदयभक्ति दृढ़ाइ॥ शुभग टापू मध्य राजत
तोयनिधिके बीच। दरश करि करि चढ़िविमानन जात सुरपुर
नीच १४३ संप्रदा जहँ चारि बावन द्वारकी अतिभीर। रंगरँग
फहरत पताके वाद्यरव गम्भीर॥ मिली गंगा सिन्धुसागर गंग
सोहतजाहँ। उठत घोरतरंग लपझप जात ऊरधताहँ १४४ छपकि
फफ फुफंकारि चिघरत अग्निठोट बहूत। वुजरपेन्स जहाज-
डोंगी मोरपंखि अकूत॥ भोड़िया पलवार कच्छा कटरशीप प-
टेल। अश्वदौर उलाक अरु पंसोइ धावत हेल १४५ चहूंओर
समाज यहिविधि सिन्धुमांझ लखात। उतरि तटवर नारि झुराडन
मध्यटापू जात॥ करहिं मज्जन गंगसागर दानदै सुखपाइ।
जियालाल मुनीशकेपद पूजहीं मुददाइ १४६ चौ०। आवत
भये मकररवि जबहीं। यह उत्साह लखोहमतबहीं॥बनैससैसैंतिस
समआयो। तबदेखो अदृष्ट नहिंगायो १४७ सोई रामानन्दकृपा-
लय। प्रकटकियो मुनिवरको आलय॥ऐसे रामा नन्द बदारा।
प्रगटि सुमारग जगदुखदारा। १४८ दो०। सियपति चरणमनाइकै
सन्तचरण धरिध्यान। कृष्णदासपयहारिकी करौं कथा शुभगान
१४९ रहे अनन्तानन्दके शिष्य कृष्ण जी दास। ब्राह्मणकुल
में जन्मियो भये परम सुखवास १५० ऐसे भगवतभक्त कहाये।
लाखनको जगपारलगाये॥ कील्हअग्र अरुकेवलरामा।
हठनिरायण देवानामा १५१ पद्मनाभकल्याण गदाधर। चेलास-
तनरहेगुण आगर॥ तेअतिसिद्ध भयेसुखकारे। लाखनभवनि-
धि पारउतारे १५२ दोहा। करतरहेयोगीप्रथम गलताजी में

वास ॥ तिनहिंकादिनि जासिद्धिबल बसेकृष्णजीदास १५३ बहुरि चितावतभेतहां पृथीराजकोजाइ ॥ एकदरिद्रीबालकहि दीन्हों नृपतिबनाइ १५४ ऐसऐसेबहुचरित हैंजिनकेसुखसार॥ परहितकारणसंतजन लेतभूमिअवतार १५५ चौ० । अबगोविन्ददासकीगाथा ॥ कहौंनाइ रघुनाथहिमाथा। येगोविन्ददास सुखसागर॥ नाभाजीके शिष्यउजागर १५६ प्रथमहिंभक्त मालसुखदाई । इनहींको नाभाजिपढ़ाई ॥ पीछेइनहीं जगतपसारा। कोटिनकोभव पारउतारा १५७ दो०। विष्णुस्वामीकीकथा अब बरणौं सुखदाइ ॥ परम भागवत भक्ति पथ कीन प्रवृत्ति महाइ १५८ चौ०। दच्छिण देश बिप्रके बंशा। जन्म लियो श्रीहरि के अंशा। शिव संप्रदाजु चारौं माहीं॥ है बिख्यातसकल जगपाहीं १५९ आचारय् हैं बिष्णु स्वामी । यदपि पुरानि संप्रदानामी ॥ परराइ बिशेषपर काशी । तासो आचारय सुखबाशी १६० शिव के नाम प्रगट है सोई । ताको कारण इहिबिधि होई ॥ मुख्य आदि आचारय याके । शिव जी धरण महा परभाके १६१ दो० । प्रेमानंद मुनीश को कीन्हों शिव उपदेश । या उपासना के गहत बीते सबै कलेश १६२ चौ०। यासंप्रदामध्य मेंजोई। अगडे ईशहि मानत सोई ॥ सोई ईश्वर श्रीनँदनन्दन। वृन्दावनबिधुजन उरचन्दन १६३ सोई श्रीगोलोक बिहारी । सदा अवस्था मुनिसम धारी ॥ सखन् साथ बिहरत ब्रजमाहीं। ब्रजगोलोक न्यूनबढ़ि नाहीं १६४ तिलक और संन्यासहु जोई। निश्च भेषम बर्णन होई ॥ यासंप्रदाकि रीति जुहोई। हैगुजरात देशमें सोई १६५ सोरठा। किन्तु बल्लभाचार्य्य कीप्रवृत्तिकी रीति पर। अतिहि अधिक सौंदार्य्य इसीसंप्रदा में लगन १६६ चौ०। विष्णु स्वामि बल्लभाचारी । रीति पुरानि यदपि सुखकारी ॥ भेद कछू तिनमें नहिं देखिय। बालकरूप उपासक लेखिय १६७ पर बल्लभाचार्य्य मुदभीने। कोई भाव रीति इमि कीने ॥ अंतःकरणप्रेमअमि बीची । अनुभव लता उमगमन सींची १६८

बरबस चित्त चुरावन हारी। कामादिक खलविटपकुठारी॥ सोई भाषि महामुद लहिहौं। वात्सल्य निष्ठामें कहिहौं १६९ विष्णुखानि संप्रदा केरी। जन उरधारि उपासन ढेरी॥ कोटिन भगवत चरण सिधाये। नानाजग दुखदूरि बहाये १७० यहगुरुद्वारा अति सुखकारी। हैगोकुल गुजरात मझारी॥ परंपरा केगुरु हैं जोई। तिनके नामकहतहौं सोई १७१ शिवजी परमानँद मुनि गनिये। आनँद मुनिप्रकाश मुनि भनिये॥ श्रीकृष्ण मुनिनारायण मुनि। जयमुनि श्रीमुनि पद्मभट्ट गुनि १७२ शंकर भट्टभट्ट गोपाला। श्रीधर भट्टहुभट्ट कृपाला॥ श्यामहु रामहु सेतभट्ट गुनि। कृष्ण दिवाकर दिनकरहू पुनि १७३ दो०। मधुनिधान विद्याधरहु ज्ञान देवहू भट्ट। शांत भट्टसुख देवहू अरुशिव देवहु भट्ट १७४ चौ०। क्षमादेव संतोषहु देवा। ध्यान देव बिज्ञानहु देवा॥ अपर दयाल देवकहि गाये। बहुरिधीरऽज्जलदेव बताये १७५ महाचार्य्य तत्यायुत जानौ। सुअहु नृसिंहाचार्य्य बखानौ॥ रुद्राचार्य्य सुबुद्धा गुनिये। परबोधाहु प्रबुद्धा भनिये १७६ भगवंताचारय सुखखानी। रामेश्वराचार्य्य मुददानी॥ सहित असूया सुदया चारय। अपरब्रह्मचिधि चरयाचारय १७७ लक्ष्मीनारायण आचारी। ज्ञानहुनाम देव सुखकारी॥ देव तिलोचन विष्णुस्वामी। लक्ष्मणभट्ट जगतमें नामी १७८ सोरठा। रामचरण सुखखानि सुखदायक द्वारक दुरित। तिनहिं बन्दि मन आनि साधुचरित वर्णनकरौं १७९ चौ०। कथा वल्लभाचारयकेरी। वरणौं सुखदायक मुददेरी॥ परम भागवत प्रेमी अधिका। जिनचरित्र अघ खगगण वधिका १८० भवनिधि पारउतारन हेतू। पोतचरित्र साधुकुल केतू॥ प्रथमहि जन्मस्थान विहाई। गोकुलमें आये सुखपाई १८१ फिरिवृन्दाबन आवत भयऊ। भगवत आराधन मनदयऊ॥ यह मनोर्थ भगवतसे कीना। वात्सल्य निष्ठा सुखलीना १८२ ताकीरीति जगतबहु होई। इहिकारण गोकुल वसिसोई॥ सेवापूजा हरिकी करई।

अति आनन्द उमँगिमन भरई १८३ वात्सल्य निष्ठाकी रीती। बांधी इमिसो कहत नवीती ॥ आयसु दियोस्वप्न भगवाना। निज विवाह तुमकरो सुजाना १८४ पुनि भगवान प्रेरि निज माया। एकविप्र तिनपास पठाया॥ कन्यालाइ दियो द्विजराई। वेदरीति भाँवरी फिराई १८५ कछुक दिवसबीते इहिभांती। महा मोद बहुविधि सरसाती॥ विट्ठलनाथ जन्म तबलयऊ। अतिवा-त्सल्य निष्ठसो भयऊ १८६ दो०। वात्सल्य निष्ठाविषे भक्तन गा-थामाहिं। तिनप्रबंध शुभ भाषिहों सुखदायक सबकाहिं १८७ चौ०। सातपुत्र जन्मे तिनकेरे। जगमहँ जाहिर सुयश घनेरे॥ गादीसातभई तिननामा। गोकुलमांझअजहुँ शिरनामा १८८ सातवार कोऊ नौवारा। भोग लगावत बिविध प्रकारा॥ धारिस्त्र-की याभाव राधिकहि। आराधत गुणज्ञान साधिकहि १८९ महारानि करि तिन्हकहँ जानत। पूरणब्रह्म कृष्ण कहँ मानत॥ यह संप्रदा अलौकिक भाँती। भावकथा इहिकहि नसिराती१९० बाबानन्द यशोदा रानी। लाड़लड़ाये हरिसुख दानी॥ तैसहि भावगुसाईं राखत। गोकुल में आनँद रसचांखत १९१ आँगन सेघर ऊंचन राखत। यह विचार निजमानस साधत॥ बालक चलत घुटुरुअन धाई। जासों गिरैं न कुवँरकन्हाई १९२ शयन समयछुतन उच्चरहीं। काचिनींद हरिजागि न परहीं॥ ऐसेअ-मित अलौकिक भावन। धारि हियेगावत यशपावन १९३ पुनि ऐसो राखत दृढ़भावै। शयन समय कोऊकस आवै॥ जगधन कहै चढ़ावन जबहूँ। भुवनकपाट न खोलत तबहूँ १९४ लीन परी छाजे पुरराई। सत्यबात यहझूंठ न भाई॥ वर्त्तमान अबहीं वह भावा। सातौंगद्दिन में सरसावा १९५ दो०। चालिस तीस पचासहू सहससाल परमान। मुद्रा आवत होतब्यय रागभोग अस्थान १९६ ऋणीरहत एतेहुपर गोकुलस्थ गोसाइँ। पदवी से विख्यातहैं इनसम दूजोनाइँ १९७ भक्ति गुसाइँनके विषेचलन की जिहि भाँति। माड़वार गुजरात में हैं बहुकही न जाति १९८

बंशबल्लभाचार्य्य के भयेभक्त बहुलोग । भगवत पारायण भये जासुकृपा तजिशोग १९९ चौ०। लखिय वल्लभाचार्य्यकभावा। भावसमान नामनिज गावा ॥ बल्लभ गोपजाति कोकहईं। जामें नन्दरायजीरहईं २०० तासोंवल्लभ नामकहाये। गोपवंशविख्यात दिखाये॥इकवइ एक साधु ब्रजआयो। बटुवा पादप डारझुलायो॥ २०१ हरिसंपुट झुलाय करितहँवां। गयो बल्लभाचारय जहँवां ॥ दर्शन करि फिरिकै तहँ आयो । हरिबटुआ ताथलनहिंपायो॥ २०२ तब आचारय सौंहीं गयऊ। निजवृत्तांत सुनावत भयऊ॥ सुनि बल्लभाचार्य्य इमिबोलत। कस सेवक स्वामिहि तजिडोलत २०३ साधु विनय करिकै तहँआयो। बटुआ सतन झुलत तहँ पायो ॥ तिन समीप साधू पुनिगयऊ। सब वृत्तांत निवेदन कयऊ २०४ आज्ञा आचारय यंह कीन्हीं । कस सेवक स्वामिहि नहिं चीन्हीं ॥ सुनत साधु तिनकी कहवानी। चरणन परो महासुख मानी २०५ पुनिउठिकै हरिसम्पुट लयऊ। भगवत आराधन मन दयऊ ॥ सत्य उपासक कोहै एहा। जिमि मूरुखपालै निजदेहा .२०६ जिमिकामी विषया मनलावै । शिशिर गरीब शिखी सुखपावैं ॥ चातृक सुखी स्वाति जलबरषै। मन्मथंभ खुवारिद लखिहरषै २०७ सेवक स्वामि प्रीतिइमि राखै। मन मधुकर पदाब्ज रसचाखै ॥ असनहिं स्वामी झूलत डारा। घूमत आप फिरत बाजारा २०८ दो० ॥ अबबल्लभ आचार्यकी परम्परा गुरुजोइ। गद्दी हर्षितवर्णऊं सुनहु संतजन सोइ २०९ चौपाई ॥ विष्णु स्वामी प्रथमहि जानौ। दोसर लक्षण भट्टबखानौ ॥ बहुरि बल्लभाचारयलेखौ । विठ्ठलनाथ भक्ति बपुदेखौ २१० गोकुलनाथ अपर रघुनाथा। यदुनाथहु घनश्याम सुगाथा॥ बालकृष्ण गोविन्द स्वरूपा। गिरिधरराय सुभक्त अनूपा २११ बहुरि नाम वृन्दावन दासा। कृष्णदासदामोदर दासा ॥ स्वामी शुकदेवहु सुखपागे। हरि चरणहु हरि यश अनुरागे २१२ स्वामीतुलसीदास सुहायो। पुनिहरि शरणजीव

हरिपायो॥ मोहनदासहु सीतारामा। प्रकटेपुनि तहँ मनसारामा
२१३दो०। कथा माधवाचार्य्यकी अघनाशन सुखखानि। सोई
अब वर्णनकरों सीयराम उरआनि २१४ चौ०। भयेमाधवाचारय
स्वामी। ब्रह्मसंप्रदामें अति नामी॥ यदपि ब्रह्मसंप्रदा पुरानी।
तद्यपि आचारय गुणखानी २१५ कीन्हो ताहि प्रकाशितभारी।
नाम संप्रदा माधविधारी॥ ब्रह्मसंप्रदाइमिकहिगाये। प्रथमहि
हरि ब्रह्माहिबताये २१६ ब्रह्मासकल जगतपरकाशी। सो संप्रदा
ब्रह्मसुखराशी॥ कौगोड़िया संप्रदाभाषत। कोउ महाप्रभुकी अ-
भिलाषत २१७ जाकोअभ्यन्तर इहिभांती। प्रभुचैतन्य महा
सुखपांती॥ गौड़देशकैरहनेवाले। इहिसंप्रदाकाहँप्रतिपाले२१८
भये भक्तआचारय नामी। हरिअवतार जगत सुखदानी॥ शि-
क्षाकिये गौड़बंगाला। कंरिहरिसौंहहरे दुखजाला २१६ याहीसों
यहनाम सुहायो। महाप्रभू गौड़िये कहायो॥ उरपी कृष्ण गांव
सुखदाना। द्राविड़ देश मध्य ठहराना२२० तहँ माधवाचार्य्य गुण
खानी। प्रगटे ब्रह्मवंशमें आनी॥ उड़पी कृष्णगावँहै जोई।
कांचीपुरीति नैऋतसोई २२१ शारीरक जो सूत्रसुहाये। अरु
गीतापरभाष्य बनाये॥ याउपासना निश्चरएहा। ईश्वररहत
सदा सँगदेहा २२२ ताकीं आयसुको जब पावत। मायासकल
जगत उपजावत॥ यद्यपि यहि निष्ठाकेमाहीं। नारायणकर
ध्यान सदाहीं २२३ जबतेभये-माधवाचारी। तिन उपासना
इमि विस्तारी॥ कृष्णकेर अवतार वदारा। वर्त्तमान सम्प्रदाम-
झारा२२४ श्रीगोलोक निवासीजोई॥ कृष्णानँदघन मानतसो-
ई॥अरु माधुर्य्य निष्ठसे ध्यांना। निष्ठा उन्नीसवीं मगाना २२५
युगलस्वरूप ध्यान उरधारत। कामक्रोध मदलोभ विदारत॥
राधामहरानी कर ध्याना। धरि परेकिया भावकंरगाना २२६
पर ईश्वरलाहू अद्वैता। सबजगभरता पूर्णब्रह्मता। उद्भव पालन
लयकर हेतू। जानत कृष्णहि सकल निकेतू २२७ लाखनभक्त
सिद्धभेभारी। यह संप्रदा मांझ सुदधारी॥ दक्षिण देश म बहु

बिस्तारा। ये संप्रदा महा मृतधारा २२८ ब्रजमें बंगालेहू माहीं। हैप्रकाश दक्षिण समनाहीं ॥ गुरुद्वार वृन्दाबन माहीं । बहुप्रसिद्ध वरणौं तिनकाहीं २२९ जिमिगोबिन्द देव अस्थाना। अपर मदन मोहन भगवाना॥ अरु श्रृंगार बटहु इत्यादी। बास करत जहँ पुरुषअनादी २३० इहि संप्रदामांझ गुरुद्वारा। हैं सहसन नहिंपाइयपारा॥ श्रीनारायण अजहिंबतायो। ब्रह्मासों नारद मुनिपायो २३१ वेदब्यास पावमुद धारी। तिनसोंलहो सुबुद्धाचारी॥ लहमुद सहित नरहराचारय। पायो बहुरिमाधवाचारय २३२ जाह्नवितीरथहू बिद्यामुनि। तीर्थमहानंदराजेन्द्रहुमुनि॥ मुनिजय धर्महु ईश्वरपुरीहु। तदुपरिबेणी माधवपुरीहु २३३ दो०। कथा माधवाचार्यकी दुखनशन सुखसार। परम्पराहू कछुकहो भक्तमाल अनुसार २३४ सो०। सीयरामपद नौमि संत चरण मनलाइकै। भक्तचरित अतिसौमि नित्यानंदकथा कहौं २३५ चौपाई। नित्यानंद भक्तभेभारी। जिन महिमासब जगत पसारी॥ भगवत धर्म प्रचारक ऐसे। भानु भानु जगभाषितजैसे २३६देशगौड़ बंगालमझारा।रहअधर्म पाखण्डअपारा॥ ताहिदूरिकरि भक्ति चलाई। रबितप हरजिमि हरिकर छाई २३७ नदिया शाँती पुरजनु लीन्हों। परदुख देखिमहा तपकीन्हों॥ गौड़देश के लोगन काहीं। भगवत धर्मबिमुख लखजाहीं २३८ श्रीभगवत तपदेखि महाना।तबतिनको दीन्हों बरदाना॥ नित्यानंद महामुद धारी। गुरूमहंत रूपनिज कारी२३९भगवद्भक्तिकेर उपदेशा। लागे करननरन तिहिदेशा॥ भक्तिप्रचार अबहुँजिहि भाँती। हैतिहि देशन सो कहि जाती २४० भगवत पारायण बहुलोगा। गृहपरिवार तजहिं सुखभोगा॥ बसत जाइवृन्दाबन माहीं। उनसम प्रेमनदोसर काहीं २४१ ऐसे भगवत बिमुख न कहीं। दीनलगाइ समारग माहीं॥ मैंहूँ सोइ शरण तांकिआयो। जानि कृपालु सुभावसुहायो २४२ पाँच सुभट बाँधिनि दृढ़धरिकै। लेहुछँड़ाइ दया उरकरिकै॥ जियालाल शठबुद्धि गँवारी।

किहि विधिअस्तुति करै तुम्हारी २४३ दो०। जियालाल भव रजु बँधो ताहि छोरिये नाथ। पाहिपाहि तवशरणहौं नमतमही धरिमाथ २४४ चौ०। नित्यानन्द कथा इमिगाई। गाथाअपर कहौं सुखदाई॥ श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु। नित्यानन्दकि भाईयुत विभु २४५ श्रीव्रजराज अंशअवतारा। लीन्हो अघनाशन धर्मधारा॥ गीतामें हरिवचन प्रकाशै। बढ़त अधर्म धर्म जबनाशै २४६ तब अवतार भूमिपरधारौं। धर्मथापि अधरम संहारौं॥ ताहीहेतलियो अवतारा। गौड़देश बंगालमझारा २४७ भगवतभक्ति तहाँ नहिंदेखी। रहीधर्म विपरीति विशेखी॥ ंगालेमें लै अवतारा। प्रगट उदर सचीके द्वारा २४८ सातवर्षके भये कृपाला। केशवभट्ट तहाँ तेहिकाला॥ काश्मीरी ब्राह्मण विद्वाना। शास्त्रविवाद आइसोठाना २४९ तेहि परास्त क्षणमें प्रभुकीन्हो। भगवद्भक्ति दयाकरि दीन्हो॥ एकसमय प्रभु सुखसोंपागे। जगन्नाथस्वामी के आगे २५० प्रेमसहित कीर्त्तन इमि कयऊ। तनकीदशा भूलि निजगयऊ॥ भये चतुर्भुजतन्मयह्वैकै। लागेकहनलोग यहज्वैकै २५१यह इसपुरीकेर परभावा। कौन सिद्धता प्रगट दिखावा॥ तब विश्वास हेत तिहि काला। भक्ति कि दृढ़ता करन कृपाला २५२ धारण करत भये षट वाहू। दृढ़ विश्वास भँयो सबकाहू॥ पुरीमध्य आजहूँ कृपाला। षट भुज दर्शन देत विशाला २५३ दो०। ऐसे प्रभु तारण तरण लीन्हों महि अवतार। जियालाल बरणन कियो निज मति के अनुसार २५४ रूप सनातन की कथा कहौं महा मुददाइ। जासु चरित सब दुख हरण सुनि कलि कलुष नशाइ २५५ चौ०। रूप सनातन द्वौ सगभाई। भगवत भक्त भये अधिकाई॥ गौड़ देश बंगाल कि बासी। भये भागवत धर्म प्रकासी २५६ पाये रहे मलिक अधिकारा। अति धनवान भरे भण्डारा॥ भई एक दिन इहि विधि बाता। गिनत रुपैया भयो प्रभाता २५७ आई ग्लानि दुहुंन मन माहीं। पुनि विचार कीन्हों निजपाहीं॥

देखौ व्यर्थ कार्य मनभूला । आलस लहो नहीं रहफूला २५८
भजन समाज बैठतेकबहीं । पूँछत रहत घड़ी प्रति तबहीं ॥
कितनीराति गई सबपाहीं । ज्ञान रहो झूंठे में नाहीं २५६
यह बिचारि मन गुरु ढिगआये । नित्यानंदहि शीशनवाये ॥
तिन सों आइक शिक्षा माँगी । आज्ञा दियो गुरु सुखपागी २६०
तुम ब्रज भूमि जाउ इहिकाला । बन अरुथल बिहारनँदलाला॥
भये गुप्त सब कालहि पाई । तिनको प्रगटकरौ तुमजाई२६१ रस
बिलास माधुर्य चरित्रा । प्रगटौ लीला ग्रंथ पवित्रा ॥ गुरु आज्ञा
माथे निजधरिकै । दोनों बंधु चले मुदभरिकै २६२ चलत चलत
ब्रज अवनिम आये । देखत पुहुमि महासुखपाये ॥ भूरम्यता
पवनसुखदाई । हरित भूमि मनहरत बनाई२६३ प्रीतमप्रिया प्रेम
में फूलीं । भेउन्मत्त दशातन भूली ॥ प्रेमानन्द मग्न भे भारी ।
विग्रह सुखदुख दिये बिसारी २६४ जब कछु सुधिशरीर में
कीन्हो । ब्रज लोगन सों पूँछ न लीन्हो ॥ है ब्रज कहाँ सुदेहु
बताई । तिन में बोलो एक रिसाई २६५ तोको सूझिपरत की
नाई । यह ब्रजहीतो परतलखाई ॥ रूपसनातन सुनिसुखपाये ।
मथुरा पुनि बृन्दाबन आये २६६ देखत बृन्दाबन की शोभा ।
यमुन प्रवाह देखि मन लोभा ॥ कानन हरित सघन अति
छाया । हरत भानुकर भास निकाया २६७ ढूंढ़त ढूंढ़त भैबड़ि
बारा । बस्ती मिली भुवन दुइचारा ॥ पूजन गये वहाँ के बासी ।
वृन्दादेबी सुखकी रासी २६८ चलेतहाँते बृन्दा जहँवाँ । देखत
भये लोग सब तहँवाँ ॥ दूधदही चढ़ाइ चलि गयऊ । तबबिश्राम
तहां तिन लयऊ २६९ पूजनहोत रहो भूमाहीं । मूरति प्रगट
रही नहिं ताहीं ॥ सोव्रत इनहिं निशामें देखी । देवी दीन्हो
दरश बिशेखी २७० है स्वरूप इहितीर हमारा । तिहि निकारि
थापौ सुखसारा ॥ थापो सो गुसाइँ सुख साजा । अजहूँ सोई
रूप बिराजा २७१ बचागऊदेतहै जबहीं । पहिले दूध चढ़त तब
तिनहीं ॥ पुनिगोबिन्द देव मुदभीने । रूपगुसाइहिं दरशन

दीने २७२ स्वप्नमांझ तिन रूप निहारी। थापितकीन्हो तिन
हिं निकारी॥ तिनकीपूजा करिबेहेतू। जीवगुसाईं बुद्धिनिकेतू
२७३ रहेभतीजे इनके सोऊ। आयेरहे त्यागलै ओऊ॥ तिनहीं
को यह आयसु दीन्हा। उनआज्ञामाथे धरिलीन्हा २७४ राजा
मानसिंह आमेरा। मन्दिर बनवायो तिनकेरा॥ बनतरहो तिन
दिन सुख छावा। किला अकबराबाद सुहावा २७५ लाल
उपलकहुँ जान न पावै। राजा इत मन्दिरबनवावै॥ बाद
शाह से आज्ञा लैकै। मन्दिरलाल रचो मुदकैकै २७६ तेरह
लाख रुपैया ताहीं। लगो मँजूरि मसालेमाहीं॥ अबतक वह
मन्दिर सुख दाता। वृन्दावनमें है विख्याता २७७ समय मुह-
म्मदशाह कि जोई। भयो चरित बरणतहौं सोई॥ सुनो नृप-
ति जयसिंहउदारा। श्रीबाराहपुराण मँझारा २७८ श्रीगोविन्द
देवके दरशे। पुनि तिन चरणन मस्तक परसे॥ आवागमनजी
वकर नाशै। जिमि तमहर रविकरपरकाशै २७९ करिअतिप्रीति
प्रार्थना ताहीं। मूरतिलैगो जयपुर काहीं॥ तहांविराजमान भग-
वाना। तासु प्रीति लखिकै सुख माना २८० प्रीतिवश्य सचरा-
चर नायक। दुष्टदलन संतन सुखदायक॥ प्रीतिसमेत हरिहिजे
भजहीं। तिनको संग कबहुं नहिं तजहीं २८१ वृन्दाबनमें दोसर
रूपा। थापितहोत भयो सुअनूपा॥ श्रीगुरु आयसु रूप गुसाईं।
वा शिव आप सुस्वश्रम पाई २८२ रचे ग्रंथ बहुभक्ति रसामृत।
रस सिद्धान्तहु भगवत अमृत॥ पांचलाख अश्लोकन माहीं।
रचनाकिये ग्रन्थबहु काहीं २८३ युगलकिशोर ध्यान सुखसारा।
तहँई एक श्लोक मँझारा॥ श्रीराधा कवरी सुख भीनी। नागि-
नि के सम उपमा दीनी २८४ देखि सुनातनजीतिहि काहीं।
यह बिचार कीन्हो मनमाहीं॥ काव्यरूप.जी माधुरि कीन्हो।
प्रीतम प्रियाभाव नहिं चीन्हो २८५ वेणी प्रिया महासुखकारी।
क्रूर जन्तुकी उपमाधारी॥ अति सुकुमारि परसमृदुगाता।
चित्रसाप जाहि न लखि जाता २८६ यहां ध्यानपर खटकत

सोई । नागिनि उपमा वेणि कि जोई ॥ एक दिवस घूमत बनमाहीं । देखा एक वृक्षकी छाहीं २८७ बालक एक खड़ो अति नीको । सुन्दर रूप भावतो जीको ॥ तासँग अमित लड़िकिनी सोहैं । देखत रूप माराति मोहैं २८८ सोहत एक बाल तिनमाहीं । उपमा तीनिभुवनमें नाहीं ॥ सुन्दरपरे हिंडोरा राजैं । तिनपर झूलि महासुख साजैं २८९ अतिसुन्दरीदारिका जोई । ओढ़सुरँग चूनरी सोई ॥ तामें केशपाश इमिसोहत । लहलहात नागिनि मनमोहत २९० देखिगुसाइँ सनातनजीने । अतिघबराइ पुकार सोकीने ॥ यहनागिनि सुन्दरिशिर ऊपर । मारो कोंगहि डारो भूपर २९१ यहकहिकै बेसुध ह्वैगयऊ । सावधान कछु अन्तर भयऊ ॥ रूपगुसाईंको अश्लोका । सुमिरण भयो गयो तब शोका २९२ जानो दूरिकरन सन्देहा । रचो चरित्र लाड़िली एहा ॥ आवतभये रूपजी पासा । परिक्रमाकरि सहित हुलासा २९३ तिनसों बरणो सकल हवाला । देखो जो कानन तिहिकाला ॥ रूपतिबड़े सनातन लेखे । परहरि भक्त तिनहिं अति देखे २९४ तासों बड़ोजानि मनमाहीं । कीनप्रणाभ प्रदक्षिण काहीं ॥ सांचीबड़ो जुहरिको ध्यावै । बरषैनीति न बड़ो कहावै २९५ रूपगुसाइँ मोटतनवारे । रहे सनातन अति सुकुमारे ॥ परिक्रमा नित ब्रजकी करहीं । युगुलकिशोर ध्यान उरधरहीं २९६ एक दिवस सो परमहुलासा । आये रूपगुसाईं पासा ॥ रूपगुसाईं चित्त विचारा । अहे सनातन अति सुकुमारा २९७ करतरहे भोजन घरमाहीं । सबको प्राप्तहोत तस नाहीं ॥ तेसूखीरोटी अन्न खाहीं । कैसे तृप्तहोत मनमाहीं २९८ छन्दगोपाल । इहिबिधि ध्यानकरत मनमाहँ । आइलाड़िलीजी यों ताहँ ॥ धारिरूप ब्रजवासीबाल । तिनसों बोली बचन रसाल २९९ बबा जनी हमारी गाय । सामग्री दीन्होममाय ॥ अस कहि दिये अदनके साज । कीजो सदन हमारो आज ३०० द्वौगुसाइँसो असन बनाइ । दीन्हो हरिको भोगलगाइ ॥ पातत्र

भे सोई परसाद। बरणनकरि नसकत सोस्वाद ३०१ कोईबस्तु मजन्मप्रयन्त। ऐसोस्वादन लखो अनन्त॥ कहतसनातन सुनिये रूप।याको कारण कहो अनूप ३०२ छन्दबरवा। कहीबात सब मनकी रूपबखानि। सुनत सनातन बोले इहिविधि बानि॥ दीन त्यागि सब संपति औऐश्वर्य्य। गयो न स्वाद रसज्ञा अति आश्चर्य्य ३०३ दोहा। परो परिश्रमहेतजा अधिक लाड़िली काहिं। चेतरहै अब अग्रको ऐसो कीजिय नाहिं ३०४ चौपाई। एक दिवस वृन्दावन साजा। भगवद्भक्तनकेर समाजा॥ कीर्त्तन भजन प्रेम अनुरागा। सहित भयो जो लखि सुख जागा ३०५ प्रीतम प्रिया प्रेम अनुरागे। बेसुध भये देह गति त्यागे॥ परठाढ़े रह रूप गुसाईं। दृढ़कीन्हे निज चित्त बनाई ३०६ करनपुरी गुसाइँ यह देखी। निजमन कियो बिचार बिशेखी॥ अग्रणीय भक्तन में रूपा। प्रेमिनमें अति प्रेम अनूपा ३०७ भगवतप्रेम उनहिं नहिं आयो। तौ औरन हित नीक न गायो॥ आये रूप निकट यह गुनि मन। रूप कि श्वास लागि तिनके तन ३०८ तस श्वास लगि परे फफोले। रूप गुसाइँ वचन अस बोले॥ है सम्बन्ध जिनहिं कछु देहीं। है असावधानी तिनकेहीं ३०९ है सम्बन्धन जिनहिं शरीरा। देखिय तनुन लखिय मनधीरा॥ भूले देह दशा नर जेई। जड़ उनमत्त रहतहैं तेई ३१० दोहा। कही गुसाइं रूपकी गाथा मति अनुसार। साधु चरित्र पवित्र अति बरणि लहै को पार ३११ चौपाई। कथासनातनकी जिहि भांती। बरणौं सोइ प्रेम की पांती॥ इक कोपीन कमंडल लीन्हे। और सकल बस्तुन तजि दीन्हे ३१२ बिचरत बिचरत पहुंचे तहँवां। एक भाटकर मंदिर जहँवां॥ रूप मदनमोहन त्रिहिमंदिर। राजत लखो सनातन सुन्दर ३१३ दरशन करिपायो सुख भारी। जात नित्य तिहि भुवन मँझारी॥ देखि रूप अति प्रेम बढ़ावत। आँखिन सों जल धार बहावत ३१४ पहिले भाट रहो धनवाना। भयो दरिद्री बहुरि निदाना॥ सो

मन में विचार यह ठयऊ। मूरति हमहिं दरिद्री कयऊ ३१५ जैसे हमहिं महा दुख दीन्हा। तैसे ही याहूको कीन्हा॥ ताही सो रोवत यह भारी। मूरति को बहुबार निहारी ३१६ भाटगुसाइँहिं पूछन लीन्हा। तुमहूंसों मूरति छल कीन्हा॥ जानिपरत घरके सुखबीते। तुमहूं भे धन संपतिरीते ३१७ तबहिं सनातन मनहि विचारा। बिश्वास न इहि हृदय मँझारा॥ भाटहि इहि विधि उत्तर दीन्हा। तेरेसँग यह कछून कीन्हा ३१८ मेरे सङ्ग कियो जिहि भांती। सो मोसों नहिं बरणिसिराती॥ भाट कहो का करौं उपाई। यह सुनिदियो जवाब गुसाईं ३१९ घर सों बाहर देउ निकारी। भगवानहिं पावौ सुखभारी॥ नतना जानैं अबका का करई। याहूते अतिदुख बिस्तरई ३२० वाने कहो कि जो ए ऐसे। तौ इनको लेहैं को कैसे॥ सुनत सनातन जीयों कहई। मेरेसँग करिबेजो रहई ३२१ सो करिचुके न अब भय मोहीं। तासु इनहिं लैजैहों होंहीं॥ यह कहिकै प्रभु मूरतिलाये। श्री वृन्दावन में पधराये ३२२ पूजा सेवा में मन लावत। भिक्षा मांगिक भोग लगावत॥ इक दिन भगवत स्वप्न किमाहीं। आज्ञा देतभये तिन काहीं ३२३ भिक्षा मांगन को जब जैये। थोड़ा लोन तहाँ ते लैये॥ लावन लगे लोन नित जबहीं। पुनि आज्ञा दीन्हों हरि तबहीं ३२४ छन्द रामगीतिका॥ लाइये कछु घृतहुलावत मांगि भिक्षासोइ। आज्य लावत देखि भगवत प्रेम हियको जोइ॥ दीन आयसु बहुरि कानन शाक बिबिध अपार। सोउ लायो करहु प्रतिदिन सुखद स्वाद अपार ३२५ दो०। कियोसनातन ध्यानतब दृष्टि खोलि उरअच्छि। भये चटोरमोहन्नाजानो यह परतच्छि३२६ चौ०। खोवाचहतमोर बैरागा। एउत्पतकीरि हैं पुनिरागा॥ यह बिचारि बिनती बहुकयऊ। तिनसों बहुरि कहन यह लयऊ ३२७ स्वादनकीइच्छा जो कीजै। सेवक धनी ढूंढ़ि तौलीजै॥ इहि बिधि हरिसों बचन सुनाई। मन्दिर बाहर बैठेआई ३२८ छन्दगोपाल। ताही समय भ-

यो असहाल। साहू कार कि तरणि समाल॥ चली अकबरा बा-
दक जाइ। काली दह समीप सो आइ ३२९ रुकी तरीन चली
तिहि बार। व्याकुल होइक साहूकार॥ पठये निज जन चहूं
दिशान। ढूंढ़ो गहन भक्त भगवान ३३० छन्दहंसी। तासों जाइ
निवेदन करैं। नौका चलै मोद मन भरैं॥ अनुगन जाइ आइ
फिरिभना। साधू एक बैठ सुखसना ३३१ चौ०। साहूकार सु-
नत तहँ आये। देखि गुसाइहिं शीशनवाये॥ अस्तुति कियो
युगुल करजोरी। हाल भनो निज तिनहिं निहोरी ३३२ सुनत
सनातन जी अनुरागे। ता कहँ लैगे भगवत आगे॥ कहो कि
इनकी बिनती कीजै। इनहीं को कर्त्तव्र गुनि लीजै ३३३ साहू
कार जोरि करदोई। सेवा हित आज्ञा कछुहोई॥ आज्ञा भगवत
दीन सुहाई। सुन्दर मन्दिर दे बनवाई ३३४ तामें राग भोग
हित कीजै। कछु संधान जगत यश लीजै॥ अंगीकार साह
यह कीना। तुरितै चली उडुप सुखभीना ३३५ साहू कार बहुरि
तहँ आई। उत्तम मन्दिर दीन बनाई॥ बड़ी भक्ति अरु प्रेम ब-
ढ़ाई। मन्दिर रचना सुखद कराई ३३६ राग भोग के हेत तहाँ-
ना। मासिक करि दीन्हों बंधाना॥ जब सब सामग्री के साजा।
भगवत सेवा हेत बिराजा ३३७ तबहिं सनातन जी सुखपाई।
सो अधिकार परम सुखदाई॥ कृष्णदास कहँ दीनबुलाई। आपु
चले अति आनँद पाई ३३८ ब्रजमण्डल परिक्रमा हेतू। गये
सनातन बुद्धिनिकेतू॥ एकबार मीनस सरकूला। नन्दगांव
ढिग भूरुह मूला ३३९ बैठेरहे तीनिदिन ताहीं। चौथेदिन
भगवत तिन पाहीं॥ सुन्दर रूप मनोहर धारे। इक ब्रजबासी
सुत बपुकारे ३४० चीरालाल शीशपर बांधे। पीताम्बर कटिमें
अरुकांधे॥ कांखछड़ी रंगीन दबाये। थाली दूध भातकी लाये
३४१ दीनसनातन जीको लाई। पुनि तिनसों इमिवचन सु-
नाई॥ गांव समीपन बैठत जाई। तुमहिंकौन इत भोजन लाई
३४२ भगवत दिय कर पदबनाई। बिना सुकृत भल खाव न

भाई। सुनत सनातन अतिसुख करिकै। परमानन्द लहे मुद भरिकै ३४३ तानि दिवस इहिविधि ब्रजचन्दा। पठये भोजन आनँद कन्दा॥ तबहिं सनातन मन अनुमाना। प्यारे को श्रम भयो महाना ३४४ यह अतिअनुचित गुनिमन माहीं। गाँव-पता पूँछा तिनपाहीं॥ दूजे दिन वहु ढूंढ़न लयऊ। कहूं पता नहिं लागत भयऊ ३४५ तब अति भये सनातन व्याकुल। भांति अनेक शोचकर आकुल॥ तिनको स्वप्न भयोतिहिबारा। वहलड़ का हमहीं सुखसारा ३४६ जोइच्छा होवै मनमाहीं। सोई मांगि लेहुहमपाहीं॥ कियो गुसाइँ विनय कर जोरी। धरोध्यान में रूपब्रहोरी ३४७ दो०। ध्यानानंद समुद्र में भयेमग्नतिहि बार। जियालाल सो किमि कहै अति मतिमंद गँवार ३४८ रूप सनातन की कथा इहिप्रकार सुखखानि। पढ़ै सुनै मनलाइकै होहिं सकल अघहानि ३४९ अबनारायण भट्ट जो श्रीगुसाइँ सुखदानि॥तासुकथा बरणन करौं रघुनन्दन उरआनि ३५० चौ०। एनारायण भट्ट सुजाना। प्रेमी भक्त भये भगवाना॥भगवत धर्म पुहुमि विस्तारक। सुखकारक भव जनु दुख दारक ३५१ दो०। कृष्ण दास जोई रहे ब्रह्मचारि सुखवास। मदन मोहनै पूजिबे कहो सनातन जास ३५२ चौ०। तिनहीं के एशिष्य सुजाना। गुरु सों सुनो भागवत गाना॥ दशमस्कंध माहँहरि चरिता। सुनत भये मुदमंगल सुरिता ३५३ बहु विधि खेल सखन सँग-खेले। रास किये तिय गल करमेले॥क्रीड़ाके बहुभांति चरित्रा। हृदय समाने सकल पवित्रा ३५४ देखन चहे सकल थलसोई। परे लखाइ कहूं नहिं कोई॥ जिहिवै भो भगवत अवतारा। बीते सम्वत पांच हजारा ३५५ तब इहि विधि भगवत आराधा। भे हरिलीन देह गति बाधा॥ पूरण करन भक्त मनआशा। भगवत मानस कीन प्रकाशा ३५६ सब थल तिनको परे लखाई। जिमि वाराह संहिता गाई॥ ताहीके अनुसार सुहाये। श्रीगुसाइँ सब थल प्रगटाये ३५७ जिनके नाम अमित परकारा। तिनको

बरणि लहैको पारा ॥ पर जे हैं विख्यात स्थाना । तिनके नाम करत अब गाना ३५८ मन्दिर श्याम रोहिणी भवना । जहां जन्म लीन्हों श्री रवना ॥ ब्रह्मघाट जहँ माटी खायो । बहुरि यशोदाहि मुखदिखरायो ३५६ बहुरिपूतना खार बखाना । प्राण सहित पय कीन्हों पाना ॥ गोप कूप अतिही सुख छावत । सोमवती कहँ जल तट आवत ३६० बा बा नन्द यशोदा माता । सुन्दर थल मथुरा विख्याता ॥ पुनि बिश्रांत घाट सुख धामा । कंसहि मारि कियो बिश्रामा ३६१ सात समुद्र कूप सुखछाये । दरश द्वारिकधीश सुहाये । राम घाट बैराग सुहायो । बैकुण्ठहु अक्रूरहु गायो ३६२ पुनि बंगाली घाट सुशोभित । सूरज घाट निरखि मन लोभित ॥ श्रीगोविन्द देव अस्थाना । गोपीनाथ भुवन सुखसाना ३६३ मोहभं मदनौ राधारमना । पुनि बांकेहु विहारी भवना ॥ अटल विहारी बहुरि बखाने । चौरासी खंभा मनआने ३६४ खंभा आठ महासुखदाई । दहीबिलोव यशोदामाई ॥ रेतीरमन महासुख भीना । सखनसंग लीला हरिकीना ३६५ यमलार्जुन भूरुहसुख छाये । ऊखलसों हरितिनहिं गिराये ॥ गद्दीसात गुसाईंनकेरी । जिनकी महिमा कहीघनेरी ३६६ दो० । रानीघाद यशोदहू अपर बल्लभाघाट । मन्दिर केशवदेवजी जेसोवर अहिखाट ३६७ चौपाई । जिहिथल रूप चतुर्भुजधारो । रंगभूमिजहँ कंस पछारो ॥ कंसखार पुनि शोभिंत तहँवाँ । कंसहिमारि डारियो जहँवाँ ३६८ पुनि भूदार दरश तहँ लहियें । मथुरा देवीके पदगहिय ॥ भूतेश्वर शिव सहज सुशीला । देविससऋषि आ बलिटीला ३६६ बहुरि दशाश्वमेध सुखखानी । चक्रतीर्थ•ध्रुव क्षेत्रहु जानी ॥ कुण्डसरस्वति योगमार्ग पुनि । शावणकटी कृष्ण गंगा गुनि ३७० छाकविहारीहू सब लायक । कंठाभर्ण महासुख दायक ॥ यमुनाकूप कालिदहघाटा । विष्णुघाट केशिहु पटघाटा ३७१ दो० । घाटविहारहु घाटरावि रसिक विहारीधाम । राधापति

शृंगारवट छैल चिकनियां नाम ३७२ चौपाई ॥ कृष्णचन्द्र
मा जी सुखखानी । रङ्गनाथ अणिमादिक दानी ॥ निधिवन
सेवा कुंजसुहाये । भगवतलीला थलसुख छाये ३७३ दो० ।
ब्रह्मकुण्ड गोविन्दहू कुण्डबेणुहूकूप । ज्ञानगूदरी बंशिबट धीर
समीर अनूप ३७४ टट्टी मौनीदासकी राधाबाग सुहाव । मधु
वन अति घन बागबहु हरियाली बहुछाव ३७५ चौपाई ॥ अब
उन अस्थाननको गैये । वनयात्रामें दरशन पैये ॥ थलथल ज-
न्म अष्टमी करिजन । दिगतिथि,मथुराजात मुदितमन ३७६
मथुरामें करिकरि अस्नाना । शिवतिथि यात्रीकरत पयाना ॥
परिक्रमा ब्रजमण्डल जोई । पच्चदिवस महँ पूरणहोई ३७७ ध-
वल ककुभ तिथि भादोंकेरी । अथवा एकादशी उजेरी ॥ यात्री
सब मथुरामेंआई । चक्रबाक तिथि उठिसुखपाई ३७८ परिक्रमा
मथुराकी करिकरि । उद्धव सुफल करत सुख भरिभरि ॥ अबजि
मि दिवस दिवस प्रतिलोगा । करत बासकरि यमताजि भोगा
३७९ बरणौं सोई थलमन भाये । कीन्हेजहँ हरिचरित सुहाये ॥
प्रथम दिवसकर करौं बखाना । करिविश्रामघाट अस्नाना ३८०
यात्राके निमित्त सब लोगा । चलैत पियादे तजि सुखभोगा ॥
भगवत भजन नेम उरधरिकै । यात्राप्रथम करत मुदभरिकै
३८१ छन्द रामगीतिका ॥ करतमधुबन ताल वनअरु कुमुदवन
के दरश । शिवनरायण शिशु-यशोदा कपिलमुनि सुखसरस ॥
दरश गिरिधरराय शंतनु कुण्डकी अस्नान । करततहँ विश्राम
देकै विविध भांतिनदान ३८२ दो० । बहुलावनमें करत हैं दूजे
दिन विश्राम । दरशन मोहनलालके करतमहा सुखधाम ३८३
चौ० ॥ गोवर्द्धनहि जात दिनतीजे । चौथे टिकत तहां मुदभी
जे ॥ परिक्रमा करिकरि गिरिराजा । दरशन करत समेत समा
जा ३८४ जहँ हरदेव विराजत स्वामी । अपरनाथजी विष्टप
नामी ॥ मन्दिर एक अनूप अपारा । श्रीयसंप्रदा को गुरुद्वारा
३८५ मानस गंगा अति सुखछाई । संकर्षण कुण्डहु मुददाई ॥

कुण्ड अप्सरा पुछड़ी कुण्डा। रासौलीहु गुलालहु कुण्डा ३८६ छन्द गोपाल॥ गाठौली अरु हरजी कुण्ड। विजयनाभ सींकर गोकुण्ड॥ रुद्रकुण्ड अरु राधाकुण्ड। कृष्णकुण्ड अरु नारदकुण्ड ३८७ सर वर कुसुमहु सरवर कुण्ड। बहुरि सुखद ऐरावत कुण्ड॥ एतेकहे अपरबहु कुण्ड। मज्जन करत नारिनर झुण्ड ३८८ चौ० ॥ दीपमालिका को गिरिराज। मेलाहोत महा सुखसाज॥ दीपदान जिहिविधि तहँहोइ। तैसाकहूं लखोनहिं कोइ ३८९ दो०। कार्त्तिक अर्जुन प्रतिपदा अन्नकूट तहँहोत। अरु पूजन गिरिराजकी अति उत्साह उदोत ३९० चौपाई॥ पञ्चम दिवस डीघमें बासा। होत तहां बहुभांति सुपासा॥ बड़े बड़े अस्थान अनूपा। बनवाये सुभरतपुर भूपा ३९१ छठयें दिवस मनानँदलाई। कामाँ में पहुंचत सबजाई॥ सप्तम दिवस बासतहँ करिकै। दरशन करत महासुद भरिकै ३९२ छन्दराम गीतिका॥ करत दरशन विजय गोविन्दचन्द गोकुलजाहँ। अपरठाकुर गोपिनाथहु वृन्ददेवी ताहँ॥ प्रीयराधा सीयरामहु अशन थालीदेखि। शिला घिसिनीकी प्ररिक्रम करत ताहँ विशेखि ३९३ चौपाई॥ अष्टमदिन सब यात्रा करिकै। बरसानें पहुँचत मुदभरिकै॥ जहँ जनुभूमि लाड़िलीजीकी। देखतहरत कुबुधि सबहीकी ३९४ मन्दिर उच्च अनूप सुहावा। भूधरऊपर शोभा पावा॥ तहँ वृषभानबबा सुखकारी। कीरति श्रीदामा छबि भारी ३९५ बहुरि दानगढ़ शोभित तहँवां। भई दानलीला है जहँवां। बहुरिमानगढ़ सोहतहाँना॥ जहँ वृषभान ललिय किय माना ३९६ पुनि दरशन विलासगढ़ केरे। प्रीतम प्रिया विहारघनेरे॥ मोरकुटी पुनि अधिकसुहाई। बोलेकृष्णमोर कीनाई ३९७ लियो लाडिली काहँबुलाई। पुनि साँकरी खोरसुखदाई॥ जहँअकेली देखिसुहाई। लियो लाड़िलिहिं पकरिकन्हाई३९८गहबरवन अरुभानु सरोवर। श्रीपोखरयुत प्रेमसरोवर॥ श्रीलाड़िली केर सुखदाई। झूलन खेलन ठौर महाई३९९दो०।

श्रीनारायणभट्टकी जन्मभूमि सुखदानि। ऊंचोगांवसुनामाजिन प्रगटे येथल आनि ४०० चौ०॥ मंदिरहलधर जीकोराजै। दरशनकरत अखिल अघ भाजै ॥ देहकुण्ड सोहत सुखकारी। अपर त्रिवेणी जी सुदधारी ४०१ नवयें दिवस मोद मनधारी। नन्द ग्राम पहुँचत नरनारी ॥ दरशन नन्द यशोदा के कर। बहुरि यशोदानन्दन हलधर ४०२ बहुरि बिहारि बिहारस्थाना। मान सरोवर मज्जन दाना॥ ललिता कुण्ड बिशाखा कुण्डा। मधु सूदनहुँ यशोदा कुण्डा ४०३ दो०। कृष्ण कुण्ड मोती सहित कदम खण्ड सुखदानि। दरश मथानी दूधजहँ मथो यशोदारानि ४०४ हाऊ जहँ नँदनन्दनै हाऊ करि डरपाव। जावक बट लाड़िलि पगन जावक श्याम लगाव ४०५ कोकिल बन जहँ लाड़िलिहि बोलि कोकिला भांति। बोलाये रासौ लिहू रास कियो सुखपांति ४०६ दरश बठेन श्याम सुखपाई। बेणी लाड़िलि गुथी बनाई॥ रंगमहल संकेत बिहारी। अरु संकेत देवि सुदधारी ४०७ दशम दिवस नर तिय सुखपाई। शेष शाइमें पहुँचत जाई॥ नारायण कर मन्दिर तहवाँ। क्षीर समुद्र तीर्थहु जहवाँ ४०८ कदम खण्ड भारग में सोहा। कानन क्षीर निरखि मन मोहा॥ दिवस ग्यारहें अतिसुख पावें। यमुनापार उतरि सब जावें ४०९ चीरघाट जहँ अति सुखकारी। कात्यायनि देवी सुदधारी॥ चीरघाटके थोरीदूरी। नन्दघाट शोभित सुख भूरी ४१० जात भद्रबन उतरिकपारा। पुनि भांडीरगहन सुखसारा॥ यात्राकरत बेल बनकेरी। मनगरीब सुख लह पुट ढेरी ४११ दिवस बारहें की अस साजा। जात माठबन सहित समाजा॥ तहँ विश्राम करत दिन तासू। दिवस तेरहें पुनि चलि आसू ४१२ नन्दी बन्दी देवी देखी। लोहकक्षमें बसत विशेखी॥ दिवस चौदहें आनँदपाई। हलधरजीमें पहुंचत जाई ४१३ दर्शन करत तहां बलरामा। पूरणहोत सबन मनकामा॥ दिवसपन्द्रहें सुखसोंपागे। मथुरामेंपहुंचत अनुरागे ४१४

मारग दरशनहोत सुहाये। गोकुल महा गहन सुख छाये॥ गोकुल मथुराकेथलजेते।प्रथमहि वर्णन कीन्हेतेते ४१५प्रगटभये सब बनथल जबहीं। इच्छाभई भट्टमन तबहीं॥ जिमि हरि इन अस्थानन माहीं। रासविलास किये बहुधाहीं ४१६ सो प्रत्यच्छ सकल जब देखौं। तब निजजन्म सुफलकरि लेखौं॥ मनइच्छा लखि भगवत कहई। बल्लभनामजु नृत्यक अहई ४१७ बाद-शाहि सेवातजि जोई। वासकरत वृन्दाबन सोई॥ ताहि अपर भूसुर शिशुलावौ। ममअरुगोपी रूप बनावौ।४१८।लीलानुकरन जौन चरित्रा। अवलोकौ थल थलन पवित्रा॥ कहोगुसाईंजी सुखपाई। बल्लभ नृत्यककाहँ बुलाई ४१६ सो सुनिके अति आनँद पायो। एकविप्र शिशुकृष्ण बनायो॥ एकबालकहिरा-धा रूपा। साजेसब शृंगार अनूपा ४२० आठ बालकन सखी बनायो। ललित बिशाखादिक सुख पायो॥ नृत्यगान बिधि सकल सिखाई। तिनके भेद सकै कोगाई ४२१ मति अनुसार कछुक अब भाषत। हरिचरित्र गुनिमन अभिलाषत॥ स्वरअरु नादग्राम सताला। मुख बहुरूप अलाप किकाला ४२२ स्वरके भेद सातबिधि गाये। षड्जर्षभ गांधार कहाये॥ मध्यमपञ्चम धैवत नामा। सप्तमहै निषाद सुख धामा ४२३ दो०। प्रगटित षड्जमयूरते ऋषभबृषभते होय।गांधारभयो मेषते सारसमध्यम जोय ४२४ पञ्चम बिरुयो कोकिला धैवतहयते जान। भोनि षादगजतेइ बिधि स्वरउत्पत्ति बखान ४२५ चौपाई॥ बहुरिनाद है तीनिप्रकारा। ध्वनिमधुरास्फुटअति सुखसारा॥ पांचस्थान नादके भाखे। नाभी हृदय कण्ठ मुख राखे ४२६ पुनि कपाल पञ्चम अस्थाना। रत्नाकर संगीत बखाना॥ स्वर समूहको ग्रामबखाना। सांगीतदर्प्पण सुखसाना ४२७ तालभेद द्वैभांति कहाये। देशीमारग नामसुहाये॥ मारग देवलोकमें छाये। देशीभूमखंडलठहराये ४२८ बहुरितालजाति पांचप्रकारा। समा मृदंगा अति सुखसारा॥ अतौगताहु पपीलक नामा। गोपुच्छा

पंचमसुखधामा ४२९ देशीताल कहौं सुखखानी। दुइसै बत्तिस नामबखानी॥ तिन के नामकछू अबबरणौं। मनलगाइ सीता पतिचरणौं ४३० छन्दरामगीतिका॥ बन्दिसियपति चरणबरण तकछुक तालसुठाम। चित्रअरुकटु कागिंडुक रामतालसुनाम॥ आदिलघुशेखरहु करुणा सर्ब इकसनिपात। चौथिपंचमद्वितियसप्तम अष्टमौ विख्यात ४३१ दोहा॥ ब्रह्मताल उडुपतिकला चतुरकुंभ निरशंक॥ दण्डवान लीला सहित लक्ष्मीहूहै बंक ४३२ कुंडन चर्चननकुलयुत इच्छाअस्तनिताल॥ जतिशेखर रंगदोतहू विक्रमसिंह रसाल ४३३ चंद्रलाड़ जतिप्रति सहित संचयपृथिसुरसाल। कुण्डल अहिगति हिमाचल ब्रह्माण्ड। हरिताल ४३४ शंख गर्गतिवड़ा सहित चक्र भुमैंड़वी राज। स्वर्णमेरु इकताजहै ताल सहित सबसाज ४३५ चाखा तीतर बकचटक कोकिल बायस जानि। कुक्कुटहूते प्रगटभे तालअंग गुण खानि ४३६ चौ०॥ पांचजाति बहुकला समेता। एक विंश मुरछना सहेता॥ चारिभाग अरुगमकपंच दश। गुणनसहित चलिकरंतमननबश ४३७ मुखचाल नृत्यअरुशब्द चाल। ऊडुपतियँग पतिपतिअडाल॥ लागधाउअरु रायरंगाला। उलथाटेंकी आलमचाला ४३८ पद पलटीहुरमयी समेता। दिंड निशंक चिंडमुदसेता॥ बल्लभनृत्यक सकल सिखायो। सहित समाज केलिथलआयो ४३९ बीससमाजीहूतिहि ठामा। आये बरणिकहौंतिननामा॥ गायक आठप्रकारसुहाये। चारि प्रकार तालधरआये ४४० चारि प्रकार बेनुके धारी। आवतभये मृदंगी चारी॥ बाजानिजनिज सकलसवांरी। लगे बजावन ताल सँभारी ४४१ बाजा बाजे चारिप्रकारा। ततअन घनघन मुखिर अपारा॥ आपु आपुमें मिलि जो बाजत। तत बाजासो अतिसुख साजंत ४४२ अनघन आकर्षन करिबाजैं। घनजो पीटि दीर्घरव गाजैं॥ जिनके छिद्रमाहँ मुखलाये। बाजैं तेईसुखिर कहाये ४४३ ततके धाता देव बखाने। बायुसखा

अनघनके आने ॥ घनके सुरगुरु देवसुहावैं । वायुमुखिरकेसुख सरसावैं ४४४ बाजा चारि भांतिके बरने । महासुमंगल आनँद करने ॥ ढाकढोल डमरू पविहंजा। भेरी शंख मुरलि औ गुंजा ४४५ दो० । काहल मुरली तूरहू पत्री बीणा साजि । दगडी यंत्र तँबूरहू झालरि घंटहुराजि ४४६ कल्पवृक्ष अठतारहू द्वैतारा चौतार । काष्ठतार सारंगिहू सुरतूरहु सुखसार ४४७ हुरकमुरज मिरदंगहू झांझ झमक अरुताल । चंगउपंगहु कुबुजयुत धौला कीशुभचाल ४४८ जलतरंग खँजरीसहित आवजपण वरसाल । बाजाबहु सुरएकहै मोह मतिनके जाल ४४९ थेइथेइ थुँगथुँग ततक ततथ्यै थ्यै ततथेइ । थेइ थेइ ततथेइथ्यै ताताताथा थेइ ४५० चौ० ॥ तकतक दिग दिग ताल सग्रामा । नाचत गावत अति सुख धामा ॥ गोपिनयुत श्रीकृष्णमुरारी । देखिसमाजहि भये सुखारी ४५१ नाचतभे नानागति धरिकै । बिबिध बर्ग अंगनके करिकै ॥ करन एकसै अष्ट सुहाये । रत्नाकर संगीत बताये ४५२ हैं दशकरन मुख्य तिनमाहीं । मुख लोचन शिर कटि उरबाहीं ॥ हृदयग्रीव पग जानु समेता । निज निज भाव दिखावसहेता ४५३ अंगअंग प्रति भावन रचिकै । नृत्यतघूमरि लपकि झकिलचिकै ॥ भेदतीनि दश मुखकेजाने। भेद दृष्टिके आठ बखाने ४५४ शिरके भाव पंचदश करने । पंच भावकटि के शुभबरने ॥ उरके जैकर भाव पचीसा । ग्रीवकि भाव पंचदश दीसा ४५५ इक्यावन पदभेद बताये। जानूके द्वैभांति सुहाये॥ करिरस बेष अशेषसुनावैं । बरषैंरस बहुतै सुख सावैं ४५६ नौ रस मिश्रित भावबनावैं । करनभेद नहिं एकदुरावैं ॥ बाजानृत्य सतालसंभारी । गावनलगे महासुदधारी ४५७ सकल रागअब कहौं सुहाये । प्रथममुख्य षटरागगनाये ॥ तिनकी युवतीतीस बखानी । पांचपांच इक इक सुखदानीं ॥ ४५८ दोहा । भैरव मेघ हिंडोल युत दीपक श्रीसुखखानि ॥ मालकोस षटरागये बरणे मुख्यबखानि ४५९ चौ० ॥ बहलबरारीभैरवि,ललिता। मधु

माधविभैरवकीबनिता ॥ अष्टपुत्रतिनके गुणखानी । देवरशा खहुहरषन जानी ४६० बंगालाहुविभाससहाना ॥ माधव ललितबिलावलजाना । मेघराग तियकहौंबखानी ॥ शारंगदेशिगौरि सुखदानी ४६१ रतिबहलभिहुबिलावलकहिये । आठ पुत्र तिन के शुभलहिये ॥ लाइर कान्हर शंकरभूषन । तिलकघटारगहारन दूषन ४६२ हैहमीरअस्तम्भसुहावा । एकदेशकर नामकहावा ॥ कहौं तीय हिंडोलबखानी । रामकली लावनि सुख दानी ४६३ देवकरी गुनकरी असावरि । तिनके आठ पुत्र वंशावरि ॥ नागधनी अरु धवलबसंता । बंदबखारअवल सामंता ४६४ लंकारहन माल बहुमारू । ये हिंडोल पुत्रमति चारू ॥ अबदीपक रागिनी गनावत । जिनको भेद गुनीजन पावत ४६५ गोड़गूजरी गौर किदारा । सिंधुलयुत दीपककीदारा ॥ तिंनकेआठपुत्रशु नचाला । नटनारायनटंक अडाला ४६६ बल्लभशक्तिबिहाग कहायो । फिरोदशाइक रंभ सुहायो ॥ हैं श्रीराग कि शुभ इपुनारी । तिन के नामकहौंसुख कारी ४६७ दोहा । संबत्रेदिसहठीटयुत हूमरिकाफा जानि । आठ पुत्रहैं तासुके सोऊ कहत बखानि ४६८ कोलाहलश्री रवनयुत सावत शूरराग । संबोधनं बड़हंसहू श्री सुतअति बड़भाग ४६९ चौपाई ॥ मालकोस तियकहौं बखानी । गौरीद्रावनि टोड़ीजानी ॥ खंभावति कर ककुभव्र नामा । आठ पुत्र अबकहौं ललामा ४७० मागरु त्रेब्रन शुद्ध कहायो । सुर गंधार पूरिया जायो ॥ गौराबल्लभ शक्ति सुहायो । मालिय कामोदर सुख छायो ४७१ भैरवसुततिय आठ बखानी । बहलगूजरी सोरठ जानी ॥ पारमंजरी बरवैसूहा । आनंदाहक आनँद जूहा ४७२ अष्टमतीय बिलावलिनामा । होत गान सुनि पूरणकामा ॥ इहिविधि षट रागन सुत नारी । जानैंचतुरं गुनीजनभारी ४७३ तीसरागिनी अरु षटरागा । अरतालीस पुत्रबड़भागा ॥ अरतालीस पतोहबखानी । इकशत बत्तिसलीजिय जानी ४७४ ते सब सबै समाजिनगाये । कृष्ण गोपिकन युत सुख पाये ॥ अवगुण रहित समाजी जेते । सुन्दर

गान करैं शुभ तेते ४७५ गायनमें अवगुणहैं जेते। कहौंबखानि सकल अब तेते॥ कंठहीन कृश देह सरोगा। राग भेद जे जान न लोगा ४७६ सुन्दर रूप न ताल नजानै। राग समय नाहिंन पहिंचानै॥ गावैं गर उठाइ मुँह बाई। कान हाथदै अति चिचियाई ४७७ बार बार गरको सहरावैं। नारिमरोरि उच्चस्वर गावैं॥ मुख मलीन अरु भौंह बटोरत। गावत झभकि झटकि स्वर तोरत ४७८ भौंह चढ़ाइ हँसत तनवाली। काकअजास्वर होइ विताली॥ अधमधिऊरध स्वरन्द सँभारी। शीश घुमावत हाथ पसारी ४७९ अति ऊँचो अति लघु अति मोटो। देहक्षीण नृत्यक सा छोटो॥ गाइ न जानै रूप न जाके। नृत्य भेद गण एक न ताके ४८० असगुण हीनएक नहिं तहवाँ। गुणन सहित सब शोभित जहवाँ॥ विच विचहास्य तर्क बहुहोई। परमानन्द मगन सब कोई ४८१ इहि विधि भयो राससुख सारा। मानहुंलियो कृष्ण अवतारा॥ अब तक राम होत हैं तबते। भट्टनराण प्रगटो जबते ४८२ यह उपकार जगत हितकीन्हो। हरिपुर जान आपु मनदीन्हो॥ सेवकनिज बुलाइ तब लीन्हा। तिनको इहि विधि आयसु दीन्हा ४८३ हम तौ अब गोलोक सिधारब। मम तन तिरबेणी तट जारब॥ पूँछा सबन कहां तिरबेणी। तब बोले गुसाईं गुण श्रेणी ४८४ ऊँच गावँ बरसाने तीरा। तहांत्रिवेणी सुखद गँभीरा। श्रीगुसाइँ तीरथइकएहू॥ प्रगटत भये महागुणगेहू ४८५ दो० इमिनारायणभट्टकी कथामहा सुखसार। जियालालद्विज भाषियो निजमति के अनुसार ४८६ अब स्वामी निम्बार्ककी सुन्दर कथा अनूप। परमभक्त भगवान के बरणौं मति अनुरूप ४८७ चौ० ॥ गोदावरी निकट शुभ ग्रामा। है मुंगेर जाहिको नामा॥ महाराष्ट्र द्विज अरुण सुनामा। नाम जयंती जिनकी बामा। ४८८ तिनके गर्भ जन्मतिन लयऊ। भगवद्धर्म प्रचारक भयऊ॥ संप्रदाय सनकादिक जोई। ताके भये प्रवर्त्तक सोई ४८९ यद्यपि संप्रदाय यह तबते।

भोअवतार हंस हरि जबते॥ तद्यपि निम्बारक बिख्याता॥कियसं-
सार माहँ सुखदाता ४९० ताते तिनके नाम सुहाई। निम्बारक
संप्रदा कहाई॥ प्रथम हंस सनकादि बताई। सनकादिक संप्र-
दा कहाई ४९१ निम्बारक बहु ग्रंथ बनाये। रीति उपासन की
प्रगटाये॥ ईश्वर माया जीव बिभेदा। भाषत भये शोधिबच
वेदा ४९२ भेद रहित पुनिकीनबखाना। जलतरंग जिमिभेदन
माना॥ शातकंभ बहु भूषण कीन्हे। नाम अनेक एक बपु ची-
न्हे ४९३ माधुरीय श्रृंगारक ध्याना। दर्शमनिष्ठमें तासुबखाना॥
इहि उपासनामें सुखछायो। युगलस्वरूपध्यान मनभायो ४९४
तिलक आदिवृत्तांत पुनीता। निष्ठाभेष माहँता गीता॥जासोंभो
निम्बारकनामा।बरणौंसोचरित्रसुखधामा४९५इकदिनइकसंन्या
सीआयो।निम्बारक समीपसुखपायो॥ निम्बारकतिहि आदरकी
न्हा। उत्तम थलले आसनदीन्हा ४९६ भईतयार रसोईजबलौं।
बीती निशा चारि घटि तबलौं॥ अशन हेत संन्यासिबुलाये।
सो इहि बिधिते बचन सुनाये ४९७ भोजन निशा करत हम
नाहीं। सुनि निम्बार्क दया उरमाहीं॥ होत भई तब रचो उपाई।
बरणौं सुनो सुमति चितलाई ४९८ निम्बउरबिरुहतिनकेद्वारा
तापर प्रगटे अर्क उदारा॥ जबसंन्यासिहि अर्क दिखाये। आ-
नँद सहित अदन तबखाये ४९९ तब ते निम्बारक यह नामा,
होत भयो सुन्दर सुख धामा॥ परम्परा याकी अब गावौं। संत
सुयश कहि आनँद पावौं ५०० हंस प्रथम सनकादिक दीन्हा।
सनकादिकसों नारद लीन्हा॥ नारद सों निम्बारक पायो।
श्री निवास आचार्य्य बतायो ५०१ तिनसों पायो बिश्वा चा-
रय। तिनसों पुरुषोत्तम आचारय॥ तिनसों श्रीबिलास आ-
चारी। तिनसों लहो स्वरूपाचारी ५०२ तिनसों पाइ माधवा
चारय। उनउपदेशो पद्माचारय॥ तिनसों श्यामाचार्य्य सुहा
ये। बलभद्रा चारय मुदपाये ५०३ तिनसों पुनिगोपाला चारी।
तिनसों कृपाचार्य्य सुखकारी॥ देवाचार्य्य बहुरिके भयऊ। सु-

न्दर भट्ट महामुद लयऊ ५०४ पद्मनाभ पुनि उपेन्द्र भट्टा। चन्द्रभट्ट पुनि बावन भट्टा । कृष्णभट्ट पद्माकरभट्टा । श्रवणहु भूरिहु माधव भट्टा ५०५ श्यामहु गोपालहु बलभद्रहु। गोपी नाथहु केशव भट्टहु ॥ गागल केशव द्वितिय सुहाये। केशव सों श्रीभट्ट कहाये ५०६ पुनिहरि व्यासदेव जी भाखे। तिनसों परशुराम सुरराखे॥ पुनिहरिवंश नरायण देवा। गोविंद गोविंद शरणहु देवा ५०७ ईश्वर शरण देव सुखपागे। श्री निम्बार्क शरण अनुरागे॥ श्रीव्रजराज शरणहूदेवा। पुनिगोपेश्वर शरणहु देवा ५०८ दो० ॥परम्परा वर्णनकरी निजमतिके अनुसार । निम्बारक की इमिकथा दुखदारक सुखसार ५०९ सो०। रामचरण शिरनाइ रामभक्त उत्तमकथा । वरणौं अति सुख पाइ पुण्य प्रकाशन अघदहन ५१० चौ० ॥ श्रीहरि व्यास कथा सुखखानी । कलिमल नाशन आनँद दानी ॥ सुमुखन शुक्लकेर सुतसोई । भेनिम्बार्क संप्रदाजोई ५११ तिलकमालसों अतिरुचिकीनी । जिनकी भक्ति प्रेमरस भीनी ॥ हरीराम पूरुव जिन नामा । वासस्थानं वोड़छाग्रामा ५१२ सम्वत सोरहसै अरु द्वादश। समैअवस्था समपैंतालिश॥ वृन्दावन आये सुखपाई। भगवत-धर्म प्रवृत्ति चलाई ५१३ सहसन शिष्य भक्तकरि दयऊ। बारह शिष्य सिद्धअति भयऊ॥ गुरुद्वाराभे तिनके नामा। न्यारे न्यारे अति सुखधामा ५१४ पद्धति रीति अबहुँ है तैसी। निम्बारक आगे रहि जैसी ॥ जब हरिव्यास बसे वृन्दावन। तब इहि भांति प्रीति उपजीमन ५१५ वृन्दावन क्षणमात्र न त्यागत। कोऊ तजत इनहिंदुख लागत॥ मुद्गर नृपति वोडछेवारा। सेवक रहहरि व्यास वदारा ५१६ व्यासबुलावनकेहित आयो। करि विनती बहु वचन सुनायो॥ कहाव्यास सुनु वचन नरेशा। वृन्दावन द्रुमलता सुवेसा५१७ बासाकियो जिनछाँह सदाई। चलिहौं तिनसों मांगि बिदाई॥ यह कहिबिदा होन हित आये। राजा तिनकेसंग सिधाये५१८

जौनै वृक्षतरे सो जावैं। हाथजोरि यह विनय सुनावैं ॥ महाराज तव शरणहि आये। अबकाआज्ञाहमहिंलगाये ५१९ राजा निज मन माहँ विचारा। इमिकहि चलिहैं देश मझारा॥ तिहि अवसर भंगिनि सुखकीन्हे। पत्तलसीथ प्रसादी लीन्हे ५२० श्रीगोविन्द देव अस्थाना। भोजन कीन्हो संतसुजाना ॥ सो परसाद लिये घरजाई। तासों कह हरिव्यास सुनाई ५२१ यामें का गोविंद प्रसादा। धाये व्यास सहित अहलादा ॥ काढ़िफुलौरी द्रुत इक लीन्हा। तुरतहि डारि बदन निज दीन्हा ५२२ यह लखिराजा कियो बिचारा। चित्तभ्रम गुरुभयो अपारा॥ अब जो इन देशहि लै जैहैं। सब लोगन कर धर्म नशैहैं ५२३ यह गुनि बिदा माँगि घरआयो। ब्यास महा आनन्द बढ़ायो ॥ अबमानन्द किशोर किशोरी। पूजत बिनय करत करजोरी ५२४ दो०॥ एक समय शृंगारवै बांधन लागे चीर। जरी चिकनई कारणै बांधत बनत न तीर ५२५ चौपाई ॥ बनो नहीं बांधो बहुबारा। तब मनमें किय क्रोध अपारा ॥ जोलड़िकाईं इबिधि ढिठाई। तौ आगेका करौ गुसाईं ५२६ मेरा बांधा तुमहिंन भाई। तौअपने करलेहु बनाई ॥ इहि विधि तिनसों बचन सुनाई। बैठेबाहर कुंज किजाई ५२७ थोड़ीदेर बाद सुख पाये। दरशन करि करि लोगजु आये॥ कहो ब्यास सो निज निज जीको। चीरा आजु बनो अति नीको ५२८ सुनत ब्यास अभिलाष समेता। धाइ देखि बोले अति हेता ॥ जो निज हाथ सुघरता ऐसी। तौ पर हाथन भावै कैसी ५२९ एक दिवस हरिभक्त समाजा। भोजनहित बैठे युतसाजा ॥ परसत रही ब्यास की बाला। विधि संयोग भयो यह हाला ५३० दूध मलाइ गिरी व्यासागे। सोलखि मनहिं विचारन लागे ॥ गुनि पति भाव प्रेम बश होई। दीन्हों अधिक दूध यह सोई ५३१ पंगति ते निकारि द्रुत दीन्हा। सुनी न बहु बिधि बिनती कीन्हा ॥ तीनि दिवस जल अन्न न पायो। अंगीकृत भक्तन समुझायो ५३२ परदण्डम गहना सबु लीन्हो।

बेंचि सुसंत रसोई दीन्हो ॥ व्यास कि तनुजा केरि सगाई। हेतेव
नो पकवान मिठाई ५३३ धरी बरात हेतसो देखा। मधुर वस्त
अति स्वाद विशेखा ॥ भगवद्भक्तन योग सुचीन्हे। चोरिकराइ अ-
शन तिन दीन्हे ५३४ जब बरात द्वारेपरआई। रीतेकोठा सकलमि
ठाई॥ तबलोगन पकवान बनाई। दिये बरातिन तुरतजिमाई ५३५
घरजन व्यासते भये उदासा। व्यास तबहिं यहबात प्रकासा ॥
जिन लोगन समधी प्रियहोवें। मीठेभोजन समधिनदेवें ५३६
सूखा आटा भक्तन देता। ऐसे विमुख अघौघ निकेता ॥ खैंचत
तिनहिं बलीयमदूता। हारिजातजे अतिमजबूता ५३७ सो०॥
एकसमय श्रीव्यास भगवत के कर बांसुरी। देतरहे सहुलास
चांदी की सुन्दर नई ५३८ चौ० ॥ छिली आंगुली ताकी को-
रा। रुधिर बहन लागो तिहि ओरा ॥ देखिव्यास चिन्ता मन
कीन्हा। अम्बर बारि बोरि कसि दीन्हा ५३९ अबहूं सोईरीति
सुहाई। वै शृंगार होत सुखदाई ॥ इस चरित्र से श्री भगवाना।
भक्त भाव माधुर्य महाना ५४० पक्का दृढ़करके उपदेशत। प्रेम
पंथमें मति परवेशत ॥ कीजिहि भाव भक्त ममध्यावै। प्रगटहोत
मैं तौने भावै ५४१ ब्राह्मण एक वोड़छे केरा। आवत भयो
व्यासके नेरा ॥ भईरसोई भक्तन जहवाँ। भोजन करन कहो नहिं
तहवाँ ५४२ तब सामग्री दियो दिलाई। ब्राह्मण चर्म पात्र जल
लाई ॥ करन रसोई लागो जबहीं। घृतलैव्यास उपानह तबहीं
५४३ दियो रसोईमें धरि सोई। ब्राह्मण क्रोध समेत उठोई॥ हाथ
जोरि बोले हरिव्यासा। हे द्विज काहे भये उदासा ५४४ जासु
धातु बरतन जलधारा। ताहीं में घृतअहै हमारा ॥ सुनिकै ब्रा-
ह्मण अधिक लजाना। अभिप्राय तिन मनको जाना ५४५
भगवतशरण तुरत सो भयऊ। भगवद्भक्तहोइ मुदलयऊ ॥
एक साधु बहुदिन तक सोई। मन्दिरकी सेवामें जोई ५४६ रहो
करत कीर्तन अधिकाई। श्यामा श्याम अग्र हरषाई ॥ जब
इच्छा चलनेकी करई। तब समुझाइ व्यास मुद भरई ५४७

एक दिवस सो अति हठ करिकै । व्यासते बिदा मांगि मुद भरिकै ॥ निज ठकुर सम्पुट जब मांगा । तब हरिव्याससहित अनुरागा। ५४८ गोरैया बांड़वे धरिकै । साधूको दीन्हो मुदभरि कै ॥ साधू भोला लै चलि भयऊ । यमुना कूल जबहिं सो गय ऊ ५४६ सम्पुट पूजा हेत उघारा । पच्ची उड़ि निज गई अगा रा ॥ व्यास समीप साधु सो आयो । हाथ जोरि यह विनय सु-नायो ५५० महाराज इत शालग्रामा । आये देउढूंढ़ि सुखधा मा ॥ कह्यो व्यास बच सत्य तुम्हारी । तिन किशोर सों भई चिन्हारी ५५१ तासों आये होहिं विशेखी। देखोढूँढ़ि भवनमहँ देखी ॥ यहकहिकै मन्दिरमें जाई । साधूसों बोलेसुखपाई ५५२ तब स्वामी किशोरजी पासा । बैठि चहत वृन्दाबन बासा ॥ तुम कतजात काज कितलागी । सुनिसाधू इच्छासबत्यागी ५५३ दो० । होत रास बृन्दाअटवि शरद पूरणा काँहँ । रूप प्रिया प्रीतम निरखि छके रसिक मनमाहँ ५५४ चौ० ॥ नृत्यत प्रिया चरणको नूपुर । टूटिपरो ताही चण भूपर ॥ तालसमामें आयो भेऊ । तबहिं व्यास निज तोरि जनेऊ ५५५ नूपुर गूंथि दियो पहिनाई । पुनि बोले इमि सबन सुनाई ॥ यह जनेउ अबतक गल भारा । राखब सुफल भयो इहि बारा ५५६ नाभाजी यह कियो प्रकासा । भक्तइष्ट भक्तन में व्यासा ॥ यह सुनिकै महन्त इक आयो । व्यास परीक्षा लेन सिधायो ५५७ तजि लाहौर समेत उमंगा । आयो बहु जमातिलै संगा ॥ चुधा चुधा सब साधु पुकारे । सुनत व्यास इमि वचन उचारे ५५८ लागत भोग देरनहिं होई । पर साधू मानत नहिं कोई ॥ तबहिं व्यास भगवत परसादा । कछु लैआये युत अहलादा ५५६ साधुन के आगे धरिदीन्हों । इक द्वै ग्रासअदन तिन की न्हों ॥ उठेसकल पुनि दरद बहाने । सीथ प्रसादि व्यास सब आने ५६० कियो बहुरि अस्तुति करजोरी । कीन्हीं आप दया नहिं थोरी ॥ जूठनि दीन्ही कृपा निकेता । कछुदिन पूंजी भो-

राधिका भक्ति महाना । भई प्रथम ते अति सुखदाना॥एकसमय राधा महरानी । अमित दया तिन ऊपर आनी ५६० चलदल पत्रमंत्र लिखिआई । दीन स्वप्न में पतावताई ॥ बहुरि कृपा तिन ऊपरकीन्ही।कूप बनाइ मूर्त्ति हरिदीन्ही ५६१ मूरति मंत्रपाइ सुखकारी । मंत्र जपन लागे उरधारी ॥ भगवत मूर्त्ति राधिका जानी । सेवा पूजा बन्दन ठानी ५६२ पुनि रुक्मिणीनाम तिय जोई । तासों प्रगटभये सुतदोई ॥ पुत्रीएक जन्म पुनि लीन्हा । तिनके बिवाहादि सबकीन्हा ५९३ वृन्दाबन तजिगेवन दूजे।तहँ भगवत इमि कारज पूजे ॥चरथा बल अति सुन्दर ग्रामा ॥ भगवत आज्ञा पाइ ललामा ५९४ ब्राह्मण एक महा सुखपाई । निज कन्या दीन्हीं ढ़ेलाई ॥ राधा बल्लभजी की मूरति । सोऊ देत भयो सुख पूरति ५९५ तब हर्षित वृन्दाबन आये । पहुँचतही मंदिर बनवाये ॥ भगवत मूरति जो सुखदाना । थापत भे राधा अस्थाना ५९६ तब राधा भल्लभी सुहाई । संप्रदाय सुख दानि चलाई ॥ राधा कृष्ण स्वरूप उपासन । इहि संप्रदा माहँ सुख वासन ५९७ पर राधिका मभावन जैसी । कृष्ण माहँ नहिं राखत तैसी ॥ आपुहि सखी भाव करिजानत । मह्वा रानि राधा उरमानत ५९८ जिन निज उर निश्चय इमि आनी । रहैं प्रसन्न राधिका रानी ॥ प्रीति राधिका मानस धरिहैं । कृष्ण कृपा आपुहिते करिहैं ५९९ राधा अमृत निधि जो ग्रंथा । संस्कृतमें बिरचो शुभपंथा ॥ ताकी प्रेम भक्ति सुखदाई । रचना काव्य वरण मधुराई ६००बरणत बनत सो न सुखदाई । हितचौरासीभाषागाई ॥ निष्ठा हरि प्रसाद में जैसी । नाहिंन कहत बनतहै तैसी ६०१ श्रीराधा की कृपा महाई। स्वयंसिद्ध हरिवंश गोसाईं॥ भजन प्रेमरस भक्ति नवीनी । चुनि निकारि संप्रदन सुलीनी ६०२ श्रीराधिकापर कियाभावा । इहि संप्रदा सुखद अति गावा ॥ श्रीहरि बंश बंश सुख साजत । देव नँदन वृन्दाबन राजत ६०३ दो० ॥ इहि बिधि श्री हरि बंश की सुभग गाथ कियगान । बरणि चतुर्भुज की कथा अब मैं

करत बखान ६०४ शिष्य रहे हरि बंश के चतुरबाहु महराज। भगवत भक्ति बिना नहीं किये जगतके काज ६०५ भगवद्भक्ति प्रताप दृढ़ाई। बहु लोगन उर भक्ति बढ़ाई॥ राधावल्लभ लाल चरित्रा। रचित काव्यमें कीन पवित्रा ६०६पढ़ि सुनि सोई चरित सुहाये। सहसन जन सदगति को पाये॥ भक्तन की सेवा इमि ठानी। तिन पद रज शिरभूषण मानी ६०७ सत संगति में मगन सदाई। जिन गुरुपद रजकृपा महाई॥ देशगोडवानो जिहि नामा। किये भक्त सब नर तिहि ठामा ६०८ रहे लोग वा देशम जेते। प्रथम उपासक कालीकेते॥ देत मनुज बलिकालिहिजाहाँ। भगवद्भक्ति प्रवेशन ताहाँ ६०९ विधि बशतहां चतुर्भुज गयऊ। देखत चरित तहांके भयऊ॥ भगवद्भक्त प्रथम करिकाली। तब होवै सब कारज हाली ६१० कालिहि भगवत मंत्र सुनायो। करिहरि भक्तताहि अपनायो॥ तब कालीनिशि स्वप्नमँझारा। दियो सबन उपदेश वदारा ६११ तुमसब जाइ चतुर्भुजतीरा। परिचरण न कहि वचन अधीरा॥ सेवक होइ विनय बहुगावो। भगवद्भक्ति तहां तुम पावो ६१२ नाहित नाशकरौं सबकेरा। सब उठि धाये होत सबेरा॥ सब कहँ शिष्य चतुर्भुज कीन्हे। माला तिलक सबन कहँ दीन्हे ६१३ कछु दिन रहि तिहि देश मँझारा। भगवतआराधनविस्तारा॥ पुनि श्रीमद्भागवत सुनाई। भगवत पूरण प्रीतिदृढ़ाई ६१४दो०। एकबैश्यकी द्रव्यकछु लीन्हों कोउ उठाइ। धायो पीछे बणिक लखि तब वह चलो पराइ ६१५चौ०॥ जब छपिबेको ठौर न पायो। तब यह देखो चरितसुहायो॥ बांचत कथाचतुर्भुजस्वामी। बैठतहां करिजाइनमामी ६१६ तिहि चण कथाहोन यह लागी। सुननलाग सो परमसभागी॥ शास्त्रविहितदीक्षाजेलेहीं। तासुनंवीन होतहै देहीं ६१७ यह सुनि शिष्य भयो तिनकेरा। आवतभयो बणिक तिहि बेरा॥ तासों कहो द्रव्य मम लायो। सो कहमैं नहिं कछू चुरायो ६१८ गोला तप्तकरायो तबहीं। ताके हाथ धरो लै जबहीं॥ तबराजाश्रेवचन

सुनायो। मैं इहिजन्म न कछुचुरायो ६१९ ताको पानि दाह
नहिंभयऊ। राजा वचन कहनइमिलयऊ ॥ आज्ञा दियो बणि
क हित शूली। तब वह साधु कहो मुदफूली ६२० सब वृत्तान्त
नृपहि समुझायो। राजा बणिकहि भवन पठायो ॥ पुनि राजा
अति आनँद पाई। शिष्य भयो स्वामीको आई ६२१ आवत
रहे साधु इक दीना। देखो पाको खेत नवीना॥ लागेखान अन्न
सुख पाई। रखवारो तब कहोसुनाई ६२२ यहतो खेत चतुर्भुज
केरा। सुनि साधू बोले तिहि बेरा ॥ तौ यह खेत हमाराही है।
मनाकरत तू बिरथाहीहै ६२३ यहसुधि जबहिं चतुर्भुज पाये।
करि प्रणाम साधुन घरलाये ॥ पुनि तिन आसन अशन
कराये। आनँदके जल चक्षु बहाये ६२४ महाधन्य आपुनकरि
जानो। की मम वस्तु साधु निज मानो ॥ ऐसे चरित महा
सुखकारी। किये चतुर्भुज जग उपकारी ६२५ छन्द रामगीति
का ॥ कहत अब सुखपाइ शंकर स्वामि उत्तमगाथ। भे प्रवर्त्तक
धर्म भगवत पार्वती के नाथ ॥ जे अनीश्वर वादि धर्मी जैन
अरु पाखंडि। विमुख भगवत दुष्टबुद्धी दियो तिन मत खंडि ॥
६२६ शास्त्र पद्धतिपर चलायो सबनको सुखसार। विक्रमादित्य
के समयदिगयाम्यभो अवतार ॥ दण्ड धरि संन्यासि है वहि
धर्म पद्धति जोइ। ताहि सों फैलाइ भगवत धर्म सुन्दर सोइ ॥
६२७ मिश्रमण्डन कहत जिन को आत्मभू अवतार। बादि
सो मीमान्समत के रहे पालनहार ॥ कहतहै मीमान्स ईश्वर
कर्महीं सबकाल। तिनहि शंकर स्वामिजीतो बादही में हाल
६२८ मिश्रकी तियकाम शास्त्रम बादकिय आरंभ। ये यतीसं-
न्यासि जाननभई वाणीथंभ ॥ नृपति अमरुक देह आपनि छां
ड़ियो तिहिकाल। योगबलसों प्राण आपन प्रविशकिय तहँ
हाल ६२९ बासकरि षटमास तातन शतक अमरुक ग्रन्थ। कि
यो रचना ललित सुन्दर कामके बहुपन्थ ॥ सकल रानी नृपति
अमरुक जानियो मनयेह। कोउ है यह योगिहै है गुप्तयाकी

देह ६३० भस्मकरिये देह याकी रहै जासोंसंग। रहै हमर सुहाग राजै राजसातो अंग ॥ यह विचारि ढुँढ़ाइतनको भस्मकरिबे हेत। दियोआज्ञा भृत्यहुतभुक् देत स्वामी चेत ६३१ तुरततजि नृपदेह निजतन माहँकीन प्रवेश। अनल रक्षा हेत नरहरि विनयकीन विशेष॥ भई शीतल दहन तबउठि चलतभे आचार्य्य। कियनिरुत्तर मंडनस्त्री जासु हित कियकार्य्य ६३२दो०॥ शिष्याकियो पुनि मिश्रको शंकरजी हरषाइ। चारबाक मतके जनन दीन्हो बहुरिहराइ ६३३. कियप्रवर्त्त निजधर्म में लखि न परत अब सोइ। मुसलमानमें सुनिपरत कहत दहरियाजोइ ६३४ शांख्यशास्त्र हठ योगियन दीन्हो शिक्षा फेरि। साथ सेवड़नके बहुरि बाद कियोतिनहेरि ६३५ चौ० ॥ बढ़मत बाद युद्ध अवि भारी। कीन परास्त शंकराचारी ॥ चेटक मंत्र धूर्त्तई आदिक। तिनकी दूरिकियो शुभ बादिक ६३६ पुनि उन इन्द्रजाल बहु कीन्हा। सो अपनेही शिरपर लीन्हा ॥ कोठे ते गिरि धरणी आये। मरे बहुत निज कृत फल पाये ६३७ बूड़े कलुक नदी में जाई। रहे जो तिनहित भयोउपाई॥ देशाधीश समग्र तिहि जोई। नावन भरवायो लै सोई ६३८नदीमाहँ सब कहँ बुड़वाये। बचे जो भगवत शरणहि आये॥ तात्पर्य्य तिन को यह अहेऊ। भगवत विमुख कोउ जो रहेऊ ६३९ अथवा वेद विरुद्धी जोई। विद्या-बल प्रभाव सो सोई॥ जिहिविधि बोध भयो तिनकाहीं। द्वंद्वकीन्हो भगवत प्रथमाहीं ६४० ठौर ठौर मंदिर बनवाये। देवालय शिव सदन सुहाये॥ पुनि प्रति देवस्तोत्र बनाये। पूजा आदि रीति प्रगटाये ६४१ विष्णुसह स्त्रनाम अरु,गीता। शारीरक जो सूत्र पुनीता॥ इनपर भाष्य रची करि न्यारी। +शंकरविजय कथा विस्तारी ६४२ नाममात्र है यहां बखानी। सूक्ष्मदाल बरणों सुखदाना॥ अगुणउपासक कहत बिचारी। निर्गुण भाव शंकराचारी ६४३ सगुण उपासक

+ शंकर विजय अर्थात् शंकर दिग्विजय॥

वैष्णव मानत । वादसुष्ठुतर ताहित ठानत ॥ सगुण उपासन पद्धति एहा । सोईवर्णत सहित सनेहा ६४४ अपने इष्टहि अंगी मानत । दूजे देव न अंग बखानत ॥ सकल संप्रदन में जिहि भांती । पूजा जप सुमिरण सुखपांती ६४५ सोई मत शंकर आचारी । ताते भेद कि नाहिं चिह्नारी ॥ भये शिष्य तिन के बहुतेरे । तिनके भे अस्थानघनेरे ६४६ वेदस्थानमुख्यतिनमाहीं । चारिशिष्यभे वसत तहाँहीं ॥ तिनके नाम भये मठजोई । तिनकेनाम कहतहौं सोई ६४७ परंपरा कछुवरणि सुनावत । शंकर के शिष्यन लौगावत ॥ सतयुगमाहँ विष्णुशिव भयऊ । त्रेतायुग वशिष्ठ सुखछयऊ ६४८ शक्ति वशिष्ठ पुत्र ताहीमें । भये पराशरहू वाहीमें ॥ द्वापर व्यास अपर शुकदेवा । गौडाचारय कलियुगभेवा ६४९ पुनि गोबिन्दहु शंकरस्वामी । जिनके शिष्यभये अतिनरमी ॥ संगेरी मठ दक्षिण राजै । पृथ्वी धराचार्य्य सुख साजै ६५० शारदमठ पश्चिम सुखछावै । तहाँ स्वरूपाचार्य्य सुहावै ॥ गोबर्द्धन मठ पूरबसोहै । पद्माचार्य्य तहां मनमोहै ६५१ दो० ॥ पायसिमठ उत्तर अहै तहाँ तोटकाचार्य्य । राजत इहिविधि मठनमें पूरणकीन्हेकार्य्य ६५२ पृथ्वीधराचार्यके तीनि शिष्य सुखदान । पुरीसरस्वति भारती तिनके नाम बखान ६५३ भयेस्वरूपाचार्य के आश्रम तीरथनाम । बनआंरण्यहु होतभे पद्माचारय धाम ६५४ गिरिपरबत सागर सहित शिष्य तोटकाचार्य्य । इहिविधि प्रगटे शिष्यदश साधक पूरण कार्य्य ६५५ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येधर्मप्रचारकनिष्ठायांविंशभक्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौचतुर्थस्तरंगः ४ ॥

सोरठा । श्रीरघुवर उरधारि अम्बर रेखाचरणकी । कोलरूप सुखकारि धारोहरि बन्दौंचरण १ छंदकंकणबद्ध ॥ जयति मापतिं उत्तमांगतिं मनस वाचकं कर्म कायजं । हरति पातकं जात नांतकं शमन दारिदं रूप बारिदं २ चौ० ॥ पुनिबन्दौं